गुल से लिपटी हुई तितली

(इन्तिख़ाबे-कैफ़)

'कैफ़' भोपाली



रामकृष्ण प्रकाशन
सावित्री सदन, तिलक चौक
विदिशा (म.प्र.)

गुल से लिपटी हुई तितली

(इन्तिख़ाबे-कैफ़)

'कैफ़' भोपाली की चुनी हुई रचनाएँ
सम्पादक : अनवारे इस्लाम

प्रथम संस्करण : १९९५
मूल्य : ७५ रु
आवरण एवं रूपांकन : गिरधर उपाध्याय
डी.टी.पी. कम्पोजिंग : शुभ श्री ऑफसेट प्रोसेसर, भोपाल
मुद्रक : बॉक्स कोरोगेटर्स एण्ड प्रिंटर्स, गोविन्दपुरा, भोपाल
प्रकाशक : रामकृष्ण प्रकाशन
सावित्री सदन, तिलक चौक
विदिशा (म. प्र.) भारत – ४६४ ००१

GUL SE LIPTI HUI TITLI (INTIKHAABE KAIF)
URDU POEMS BY - 'KAIF' BHOPALI
Hindi Script by - Anware Islam
ISBN-81-7365-5



नाम : अनवारे इस्लाम
पिता का नाम : श्री सलाम सागरी
आयु · लगभग ४७ वर्ष
शिक्षा : स्नातक
रग : काला
साकिन · सी–४३, बाग उमराव दुल्हा, तहसील हजूर, जिला–भोपाल
पेशा सरकारी नौकरी (पंचायत एवं समाज कल्याण विभाग में)

वैसे इसका पूर्वजीय आवास सागर बताया जाता है, जहाँ ये १ अक्टूबर १६४७ ई को बरोज गुरुवार संध्या चार बजे अपने समय के एक मशहूर शाइर के घर पैदा हुआ। इसलिए कविता करना इसकी मजबूरी थी, लेकिन कविता करते–करते कब गजल कहने लगा, बहुत कोशिशें करने के बाद भी नहीं उगलवाया जा सका। कुछ ठोस सुबूत अवश्य हाथ लगे हैं जिनसे ज्ञात होता है कि ग़ज़ल अच्छी कहता है। लेकिन आदत से मजबूर है कागज़ के टुकड़ों पर लिखता है जो बाद में खो जाते है। ज्ञात यह भी हुआ है कि पिछले दिनों बच्चों के लिए प्यारे–प्यारे गीत लिखे हैं, कई किताबें छप गई हैं।

आजकल अनेक महत्वपूर्ण उर्दू शायरो की पुस्तकें देवनागरी में लिपिबद्ध करने में व्यस्त बताया जाता है, यह एक महत्वपूर्ण और प्रशंसनीय कार्य है, लोगों मे ऐसी चर्चा है।

मेरी अपनी टिप्पणी यह है कि यह काफी खुशमिजाज मिलनसार और यारबाश इंसान है, दूर–दूर तक फैले हुए दोस्त इसे बहुत प्यार करते हैं, मैं कुछ ज़्यादा ही।

मनोहर
६, काव्या, अंदर किला, विदिशा,

हमारी सांस्कृतिक विरासत

देवनागरी लिपि में उर्दू साहित्य के प्रकाशन की परम्परा नई नहीं है। इस सिलसिले की कड़ियाँ हमे काफी पीछे तक दिखाई देती हैं और यह सिलसिला आज भी वर्तमान है। बल्कि इसका दायरा और भी व्यापक होता जा रहा है। क्योंकि आज हिन्दी का रुचि सम्पन्न पाठक अपने आपको उर्दू साहित्य के काफी करीब महसूस कर रहा है।

हम जानते हैं कि इसी देश मे बनते और संवरते हुए धीरे-धीरे हर खासो-आम की बोली ने एक नई भाषा उर्दू का रूप लिया और बाद को अपना स्वतंत्र अस्तित्व काइम कर अपने मीठे लबो-लहजे के कारण हर उस होंट पर थिरकने लगी जो अपनी बात, न केवल प्रभावशाली ढग से कहना चाहता था बल्कि बहुत खूबसूरत अंदाज में स्वयं को अभिव्यक्त भी करना चाहता था। इस सम्बन्ध मे, यह बात अवश्य ही दुखद है कि एक ही संस्कृति के दो भाषा रूपों को, कुछ तो ऐतिहासिक और कुछ राजनैतिक कारणों से दो अलग-अलग रास्ते अपनाने पड़े, क्योंकि निरंतर ही दोनो के बीच दूरियाँ पैदा की गई। लेकिन सुखद यह है कि इन दोनो रास्तो की मंजिले अलग नहीं हैं। इस कुप्रयास के पीछे निश्चित ही कोई धार्मिक या सांस्कृतिक कारण भी नहीं बल्कि विशुद्ध राजनैतिक कारण ही रहे, और हम जानते हैं कि इस प्रकार के राजनैतिक कारण कभी भी ठोस और स्थाई नहीं होते।

उर्दू और हिन्दी दोनो ही समान रूप से हमारी सांस्कृतिक विरासत हैं, क्योंकि हमारे इतिहास के एक कालविशेष मे हमारी सांस्कृतिक आवश्यकताओं के तहत इनका जन्म हुआ है। इस कारण हमारी साझा संस्कृति में इनकी जड़े संयुक्त रूप से बहुत गहरे मे जमी हुई हैं, जिन्हे कोई भी बनावटी प्रयास कभी अलग नहीं कर सकता।

यह संग्रह 'इन्तिख़ाबे-कैफ़' उक्त मान्यता को बल भी प्रदान करता है और हमारे कथन को प्रमाणित भी करता है।

इस किताब या कैफ़ सा. के मुताल्लिक कुछ कहने की जरूरत इसलिए महसूस नहीं करता कि कैफ़ और उनकी शाइरी किसी तआरुफ़ की मोहताज़ नहीं है। कैफ़ साहब ने अपने को अभिव्यक्त करने के लिए अपना एक विशिष्ट लहज़ा

अख़्तियार किया था, जिसने उनकी सबसे अलग पहचान बनाई। यद्यपि अभी संज़ीदगी से उनका मूल्यांकन होना बाकी है लेकिन यह बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि जब समीक्षको और साहित्यिक आलोचको की कलम चलेगी तो कैफ़ साहब को उस मुकाम पर देखा जा सकेगा जिसके वे वास्तविक हकदार थे।

कैफ़ साहब का पूरा नाम ख़्वाजा मुहम्मद इदरीस 'कैफ़' भोपाली था। आपका जन्म २० फरवरी १९१७ को भोपाल में हुआ और भोपाल से ही २४ जुलाई १९९१ को वे इस दुनियाए-फ़ानी से इन्तिकाल कर गए।

दरअस्ल रुचि सम्पन्न मित्रों का काफी समय से आग्रह था कि कैफ़ साहब को देवनागरी मे प्रकाशित किया जाना चाहिये ताकि हिन्दी का पाठक वर्ग भी उन्हे पढ सके। इसलिये अपने समय के इस महत्वपूर्ण शाइर के प्रति अपनी श्रद्धांजलि देवनागरी लिपि मे पुस्तक के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मैं शुक्रगुजार हूँ अपनी प्यारी सी बहिन परवीन कैफ़ (कैफ़ सा की शाइरा बेटी) का जिसने इस किताब के लिये सामग्री उपलब्ध कराई। आभार मानता हूँ आदरणीय शलभ श्रीराम सिह का जिन्होने इस किताब के लिए बुनियादी तौर पर प्रेरित किया और न केवल मुफ़ीद मश्विरे दिये बल्कि मेरी रहनुमाई भी की। अत मे विशेष आभार मानता हूँ श्री हरिवश सिलाकारी (रामकृष्ण प्रकाशन) का जिन्होने पाठक वर्ग और कैफ़ साहब के बीच मुझसे सेतु का काम लिया।

एक और निवेदन पाठक वर्ग से यह कि उर्दू शाइरी को देवनागरी मे लिपिबद्ध करने की अपनी दिक्कतें हैं जिन्हे पाठक समझ सकते हैं। अभी तक उर्दू शाइरी को देवनागरी मे लिपिबद्ध करने का जो तरीका अपनाया जाता रहा है उसे न अपनाते हुए मैने शब्द को वैसा लिखने का प्रयास किया है जैसा कि वह बोला जाता है। कुछ जगह पाठक के जिम्मे भी शब्द छोडे हैं कि वह स्वयं अपने अंदर की लय के सहारे स्वाभाविक 'फ्लो' के साथ पढे। मिसाल के तौर पर 'कोई' शब्द लिखा है जिससे शैर बेवज़्न हो जाता है। अस्ल मे यहाँ 'कुई' लिखा जाना चाहिये। यह तो ख़ैर जानते-बूझते हुए मैंने इसलिए किया है कि अन्य कोई समस्या न खडी हो लेकिन आप और भी कई ख़ामियाँ महसूस कर सकते हैं जिन्हे आप मेरी कमजोरी करार देते हुए, माफ कर देगे, ऐसी उम्मीद करता हूँ। इसी के साथ यह आग्रह भी कि मेरी त्रुटियो की जानिब अवश्य ही ध्यान दिलायें ताकि भविष्य में इनसे बचा जा सके।

अनवारे इस्लाम
(सम्पादक)

बाग उमराव दूल्हा,
भोपाल - ४६२ ०१०

रहे। उनकी नज़्मों और गीतों ने भी श्रोताओ की भरपूर प्रशंसा प्राप्त की। लेकिन देखा जाए तो उन्हें प्रसिद्धि दिलाने मे उनकी इश्किया शाइरी ही का योगदान है। इसमें शक नहीं कि कैफ़ की ग़ज़ल उन्हीं राहो से गुजरी है जो ग़ज़ल की परम्परागत राहें हैं। लेकिन उनकी गजल में जो आशिक़ाना बांकपन और हुस्नो-सदाक़त (सच्चाई) है वो सिर्फ़ उनका हिस्सा है। उन्होंने अपनी ग़ज़ल मे अगलो के अनुभवों पर संतोष नहीं किया, खुद अपने दिल की धड़कनो को समो दिया है और इस लुत्फ़ के साथ कि उनकी गजल आपबीती होते हुए भी जगबीती मालूम होती है।

तख़्लीके अदब (साहित्य-सृजन) का कोई नाम नहीं होता। वह खुद न तो परम्परागत होता है न प्रगतिशील। वह एक ऐसे ख्वाबनाक माहौल में जन्म लेता है जो जमानो-मकान (देशकाल) की क़ैद से आज़ाद होता है।

तख़्लीके अमल के दौरान (सृजन के दौरान) फ़नकार के जहन (मस्तिष्क) में न कोई सूरत होती है न हैयते-तरकीबी (रूप और आकार)। हाँ मौज़ूआती (विषय प्रधान) शाइरी में इसका लिहाज़ रखा जाता है कि शैर का तअल्लुक़ किसी न किसी शक्ल मे मौज़ू (विषय) से क़ाइम रहे। लेकिन मौज़ू जब खुद शैरी पैरहन (लिबास) अख़्तियार करने की मंज़िल से गुज़रता है तो फ़नकार का ज़हन इन बन्दिशो से आज़ाद होता है जो मौज़ू का तकाजा होती हैं। इसीलिये एक शाइर के कलाम मे मौज़ूआती फ़िक्रें भी उसी ख़्वाबनाक फ़ज़ा (वातावरण) की पर्वर्दा (पाली हुई) होती हैं जो गैरमौज़ूआती शाइरी के लिये मख़्सूस (विशिष्ट) है।

शैर क्या है, ये बहस पुरानी होते हुए भी नई है। इसलिये मुझे अर्ज़ करने की इजाजत दीजिए कि हक़ीक़ी शैर वो है जिससे हमारा ज़हनी और जज़्बाती (मानसिक और भावात्मक) राबिता (सम्पर्क) मुस्तक़िल (स्थाई) हैसियत रखता हो। जो हमारी तन्हाई का रफ़ीक़ (प्रिय साथी) भी हो और हमारी मजलिस का शरीक भी। जो हमारा हमसफ़र भी हो ओर हमारी राहों का रहबर (पथप्रदर्शक) भी। जो हमारे होटों पर तबस्सुम (मुस्कराहट) बनकर खेले और हमारी अंधेरी रातों मे रोशनी की किरन बनकर फूटे, जो हमारे दिल में हूक बनकर उठे और पलको पर आँसू बनकर चमके। इस ऐतबार से कैफ़ के अश्आर (शैरो) से हमारा रिश्ता गहरा भी है और पुराना भी।

कैफ़ साहब वक़्त के तक़ाज़ों (समय की माँग) और असरी रुज्हानात से खूब परिचित थे। उन्हे प्रगतिशील साहित्य-आन्दोलन से गहरी वाबस्तगी थी। वो अपनी गर्मनवाई (आवाज़) की बिना पर क़ैदो-बन्द की सौबतें भी बर्दाश्त कर चुके थे। लेकिन वाक़या ये है कि मेहो-वफ़ा (प्रेम) की दास्तान सुनाते वक़्त उनका आलम कुछ और ही होता है। वो मुजस्सम इश्क़ बन कर नवा पैरा (आवाज़

देना) होते हैं और जिन्दगी की सारी सदाक़तों (सच्चाइयों) को अपने बयान में समो लेते हैं।

आपकी मुहब्बत में, जान भी फ़िदा कर दी,
दिल ने इब्तिदा की थी, हमने इन्तिहा कर दी।

नाम ले-लेके सरे राह पुकारूँगा तुझे
इतनी बढ़ जायेगी वहशत मुझे मालूम न था।

कौन है ये दीवाना, तेरे घर के पास आकर,
पूछता है अपना घर, सारे राहगीरों से।

इधर आ रक़ीब मेरे, तुझे मैं गले लगा लूँ,
मिरा इश्क़ बेमज़ा था तिरी दुश्मनी से पहले।

कैफ का वाल्हानापन, उनकी चोट खाई हुई तबीयत, उनके लहजे का गुदाज और उनकी भरपूर नग्मगी ने उनकी इश्क़िया शायरी को जिन्दा शायरी का दर्जा बख्श दिया है। वो इश्क के एक-एक मकाम से वाकिफ़ हैं और हुस्न की एक-एक अदा के राजदार हैं।

कैफ की शायरी एक रफ़ीके-सफर (प्रिय सहयात्री) की तरह हमारे साथ-साथ चलती है। वो जिदगी की कर्वटो को समेटे आर्ज़ूमन्दियो और महरूमियो (इच्छाओ और उपेक्षाओं) से गुजरती है, दिलो को छूती, हमे अहसास और इर्फान (ज्ञान, जानकारी) की मन्जिलो से आश्ना (परिचित) कराती है। कैफ़ के इन शैरो की रिफाकत (प्रियता) को कोई कैसे भुला सकता है-

बढे वो दामने-रंगीं से पोंछने आँसू,
जब आस्तीन भी अपनी निचोड़ ली मैंने।

दिन भी गुज़ारना है तड़प कर इसी तरह,
सो जा दिले हज़ीं के बहुत रात हो गई।

जंगल की तरह रात, पहाड़ों की तरह दिन
क्या-क्या मिरी हस्ती से सिवा देके गये है।

उस सितमगर को सितमगर भी नहीं कह सकते,
हाय हम इश्क़ के मारों की जुबाँ तो देखो।

आपने झूठा वादा करके,
आज हमारी उम्र बढ़ा दी।

कैफ़ ने समाज, माहौल और विरासत के मुर्दा तसव्वुरात (कल्पना) से ऐलानिया बगावत की है और इस जज्बे (भाव) की गूँज उनकी गजल में भी सुनाई देती है। लेकिन ग़ज़ल मे ये लय सिर्फ उतनी ही ऊँची है जितनी गजल की तहज़ीब इजाजत देती है। वो इस मुकाम तक हर तरह के नशेबो-फ़राज(उतरा-चढ़ाव) से गुजर कर आए हैं और उनके जज्बाओ-फ़िक्र मे ऐसा फनकाराना ठहराव नजर आता है जो बड़ी शायरी की पहचान है। उनकी शायरी अपने ही दर्दो-दाग की रूदाद नहीं है, आर्ज़ू और जुस्तजू का मिला जुला इज़्हार (अभिव्यक्ति) भी है। कैफ के मसलक (सरोकार) से परिचय के लिये इन अश्आर पर नज़र रखना ज़रूरी है-

मुझको ग़मे-हयात से फ़ारिग न जानिए,
होटों पे कुछ हँसी है सो दीवानापन की है।

चुन लिया एक-एक कांटा राह का,
ऐ मुबारिक ये बरहना पाईयाँ।

डर गया हूँ के मुझे नींद न आ जाए कहीं,
जब सरे-राह कोई छाँव घनी देखी है।

दैरो-हरम के बाद कहाँ जाईये के अब,
इक शम्मा रह गई, जो तिरी अन्जुमन की है।

जमालयात (सौन्दर्य शास्त्र) में ये बहस आज भी दिलचस्पी का मौजू (विषय) बनी हुई है के इन्सान को अपने आपसे मुहब्बत करने और अपनी इच्छा-पूर्ति की आज़ादी है या उसे अपनी हर इच्छा और तमाम खुशियो को इस वजूद (अस्तित्व) के एहकाम पर क़ुर्बान कर देना चाहिये जिसे उसने अपना ख़ुदा समझ लिया है। कैफ़ ने इस सवाल को बड़े तीखे अन्दाज में पेश किया है जिससे फ़ितरते-इन्सानी पर उनकी निगाह की गहराई और हयातो-कायनात (जीवन और सृष्टि) के रिश्तो की जुस्तजू ज़ाहिर होती है। कैफ़ फ़र्माते है-

तिरा वजूद मुसल्लम, मगर कहाँ है तू,
मिरा वजूद फ़क़त वाहमा, मगर हूँ मैं।।

इसी गजल में उन्होंने इन्सानी जिन्दगी की बेऐतबारी एक छोटी तश्बीह (उपमा) के साथ पेश की है जिससे इस क़ौल की तस्दीक़ (कथन का प्रमाणीकरण) होती है के मज्मून (विषय) दुनिया में नया नहीं होता, अस्लूब (रचना शैली) की खूबी उसे ताजा कर देती है –

जो मौतबर हूँ तो इतना ही मौतबर हूँ मैं,
के सत्हे-आब पे ठहरा हुआ शजर हूँ मैं।

कैफ़ की शायरी के फ़िक्री अनासिर (चिन्तनीय तत्व) को मैं उनकी इश्किया शायरी से अलग कर के पेश करना नहीं चाहता। उनके यहाँ हुस्नो सदाकत (सौन्दर्य और सचाई) और खैर, एक ही हकीकत के तीन पहलू हैं जो जगह-जगह उनकी गजलों मे नजर आते है। कौन जाने कैफ के बाद कब कोई आये और ये कहता हुआ गुजर जाये-

बाबा तुम्हारे दर पर, बरसों नहीं रहेगे,
चल देंगे हम मुसाफ़िर, शब भर क़याम करके।

अख़्तर सईद खां
२०, इतवारा, भोपाल

कैफ़ की शायरी के बारे में

यह एक तथ्य है कि ग़ज़ल एक सामंती सांस्कृतिक उत्पाद है, जिसकी अपनी दीर्घ और गरिमामयी परंपरा है, जिसके अपने उसूल हैं, जिसके अपने साँचे हैं और जिसके अपने चश्मे भी हैं। लेकिन ऐसा भी हुआ है कि कभी-कभी गजल अपनी लीक से भी हटी है और उसके नये-नये अन्दाज भी पैदा हुए हैं। वह गद्दी से उतरकर अवाम के पास भी आई है और अपने समय की सच्चाईयो से रूबरू भी हुई है। ख्वाज़ा मुहम्मद इदरीस 'कैफ' भोपाली हमारे समय के एक ऐसे ही शायर हैं जो ग़ज़ल को अवाम तक लाने में कामयाब हुए हैं, जहाँ-

'चाँदनी रात नहीं धूप है मैदानों की'

और जहाँ मेहनतकश हैं, अवाम है, उनकी रोजी-रोटी है और उनका पसीना है-

ऐ कैफ कोहकन हैं हम आज की सदी के
जीते हैं काम करके, मरते हैं काम करके।

यहाँ तक कि कैफ जिस काव्य भाषा (Poetic diction) का इस्तेमाल करते है वह भी अवाम की ही भाषा है, 'अतीट' की नहीं, मस्तो की भाषा है, लुटने वालों की भाषा है-करम फर्माइयाँ, पुरवाइयाँ, सुल्तानियाँ, बरखा रुतें, मियाँ, सारा, फलाने, नीम, इमली, भूका, होक रहा हैं, दौंक रहा है- diction अवाम का चरित्र ही उद्घाटित करता है।

और यहाँ कैफ भोपाली जिस दुनिया और जिस सदी की बात करते हैं वह बहुत व्यापारी है-

मत किसी से कीजिये यारी बहुत
आज की दुनिया है व्यापारी बहुत।

इस व्यापारी दुनिया में प्रेम-मुहब्बत भी सरमाया-परस्तो की तिजोरी मे बन्द है-

वो भी सरमाया-परस्तों की तिजोरी में है बन्द
मेरे महबूब मिरे पास मुहब्बत भी नहीं।

यहाँ इस दुनिया में, इस सदी मे और हमारे इस समय में कैफ़ भोपाली अवाम की प्यासी रूह की आवाज सुनते हैं-

हमेशा एक प्यासी रूह की आवाज़ आती है
कुओं से, पनघटों से, नदियों से, आबशारों से।

कैफ़ साहब हमारे इस और ऐसे समय मे प्रेम, संघर्ष और एकता के शायर हैं। प्रेम उनकी शायरी का एक ऐसा हिस्सा है जिसकी महक और गमक उर्दू की पारंपरिक शायरी से अलग, प्रतिबद्ध प्रगतिशील शायरी से भी अलग, अपने घर-परिवार, पास-पड़ोस में मानव-मन की एक भावात्मक सच्चाई के बतौर उपस्थित है। वह एक हकीकत है। प्रेम उनकी शायरी और उनकी अभिव्यक्ति की पहचान भी है जहाँ उनका अपना एक अन्दाजे-बयाँ भी है-

लिखता है ग़म की बात मसर्रत के मूड में
मख़्सूस है ये तर्ज़ फ़क़त कैफ़ ही के साथ

कैफ़ की इस सादा बयानी मे घर, नीम, इमली, तितली, बादल, अंगूर की बेल, आंगन, बरगद की छाँव, सुबह का तारा, गुल, बच्चा-सब कुछ हमारे देखे-भाले हैं और कैफ़ के यहाँ प्रेम की इस अभिव्यक्ति मे ताज़गी और सादगी दोनो एक साथ हैं-

तेरा चहरा सुबह का तारा लगता है
सुबह का तारा कितना प्यारा लगता है
तुझसे मिलकर इमली मीठी लगती है
तुझसे बिछुड़कर शहद भी खारा लगता है

गुल से लिपटी हुई तितली को गिराकर देखो
आँधियो, तुमने दरख़्तों को गिराया होगा।

प्रेम की यह अभिव्यक्ति और अदायगी एक ऐसे आदमी की अभिव्यक्ति और अदायगी है जो हममे से ही एक है लेकिन जो सेठ मदनगोपाल नहीं है। मुक्तिबोध जिस जनता के साहित्य की वकालत करते हैं कैफ़ की शायरी के केन्द्र मे वही शख़्स है, वही आदमी है जो हमारे पास-पड़ोस मे है, जो अवाम है-और जो हममे है, इसी दुनिया मे, जो कभी परदेस मे है तो कभी आँधियों में, कभी शहर की सूनी फुटपाथो पर तो कभी मयखानों मे, जो काँच का शरीर और कागज का सर लिये घूम-फिर रहा है और जो भलो की बस्ती मे बुरा भी है-

गालियों की बारिश है पत्थरो की आँधी है
एक मैं बुरा निकला सब भलों की बस्ती में।

कैफ़ की शायरी भलो की बस्ती में इसी बुरे आदमी की शायरी है, इसके प्रेम की शायरी है, इसी के दुख-दर्द की शायरी है, इसी की आशा-निराशा की,

रिश्तों की शायरी है, इसी आदमी के संघर्ष की भी शायरी है। हमारे समय की क्रूरताओं से यही आदमी जूझ भी रहा है, अयोध्या और उसके बाद के हालात से यही आदमी जंग भी कर रहा है; अपने अस्तित्व और जातीय गौरव की सुरक्षा की ख़ातिर यही आदमी धर्मान्धता से जूझ रहा है, और अम्न की ख़ातिर आवाज़ लगा रहा है। कैफ़ इसी आदमी के साथ हैं और कैफ़ की शायरी इसी आदमी की उन पवित्र चिन्ताओं से लबरेज़ है जो समाज और देश की बहतरी की भावनाओं, त्याग के जज़्बों और जूझने के जोश से भरी हैं। कैफ़ धर्म के ठेकेदारों के ख़िलाफ़ जंग का ऐलान करते हैं। वे धार्मिक आडम्बरों के ख़िलाफ़ भी खड़े होते हैं-

अपने कैफ़ साहब का हाल कुछ निराला है
शैख़ से अदावत है, जंग है बिरहमन से।

चलते हैं बचके शैख़ो-बिरहमन के साये से
अपना यही अमल है बुरे आदमी के साथ।

ये दाढ़ियाँ ये तिलकधारियाँ नहीं चलतीं
हमारे अहद में मक्कारियाँ नहीं चलतीं।

कैफ़ जिन भलों की बस्ती मे अपने बुरे होने का ऐलान करते हैं -वह हमारी-आपकी, अवाम की एक हकीकत है; हमारे आपके आसपास की एक सचाई है और कैफ़ यहीं हमारे सच्चे नुमाइन्दे शायर भी होते हैं जब वे हमारे जज़्बात को अपनी शायरी में, भाषा और बयान की ताज़गी और सादगी से रखते हैं, ज़लज़लों की बस्ती मे घर बसाते हैं और हमारे आगे-आगे चलते हुए कहते हैं-

अपना हक़ माँगा नहीं जाता है छीना जाए है।

और फिर हमे आवाज़ देते हैं-

दोस्तो ! आओ के हंगामे-सफ़-आराई है
आज तारीख़ नये मोड़ पे ले आई है।

विनय दुबे

माहे कामिल

भोपाल का शैरी उफुक जिन चाँद-सितारों से रोशन है उनमें एक नाम 'कैफ़' भोपाली का भी है।

उर्दू शायरी का यह माहे कामिल (पूर्ण चाँद) कई मानों (अर्थों) में अहम है। कैफ़ साहब के यहाँ अदबी जबान को इस तरह इस्तेमाल किया गया है कि वह बोलचाल का रूप अख्तियार कर लेती है।

दर हक़ीक़त कैफ़ साहब अवाम के साथी, उनके ख़यालों के अक्कास और हमनवा भी थे। अपनी ज़मीन से उनका सीधा रिश्ता हमेशा कायम रहा, बहैसियत, शाइर भी कैफ़ साहब की मक्बूलियत का यह आलम था कि हजारों के मज्मे को अपने शैरों के जादू में डूबो देते थे।

जब तक कैफ़ साहब का काम मौजूद है उनके चाहने वालों और पसंद करने वालों की तादाद कम न होगी। उन्होंने जिन्दगी के जहरे-आब को आबे-हयात बनाने का फ़न दरयाफ्त कर लिया था।

इक़बाल मसूद

बी-१९
अहमदाबाद पैलेस
भोपाल - ४६२ ००१

क्रम





नात *



मेहनत से उसे दह्[1] में जीना पसंद आया,
मज़दूर के माथे का पसीना पसंद आया !

हालांके वो बालाए-सलातीने जमीं[2] था,
टूटे हुए छोटे से घरौंदे में मकीं[3] था !

हालांके ख़ुदा ने उसे बख़्शी थी ख़ुदाई,
घर में थी फ़क़त एक खजूरों की चटाई !

---

* नअत (नात) जो कि पैगम्बर हजरत मुहम्मद की तारीफ़ में छंदबद्ध रचना होती है १. दुनिया, २. पृथ्वी के तमाम बादशाहों से ऊपर, श्रेष्ठ ३. निवासी,

हालांके जमाने के लिये फ़ैज था जारी,
ख़ुद टाट के पैवन्द की कमली में गुजारी !

सूखी हुई रोटी पे वसर शामो-सहर की,
फ़ाके से रहा और किसी को न ख़बर की !

इज्जत पे फ़िदा उसकी बुख़ाराओ समरकन्द[४],
ख़ुद हाथ से जूते में लगा लेता था पैवंद!

बे कुर्सीओ-ताऊस[५], बिला कल्गीओ-रेशम[६],
वो शाहे मुअज्जम[७] था बहर हाल मुअज्जम।

बेवाओं का हमदर्द, यतीमों का वो हमदम,
ऐ सल्ले-अला[८], सल्ले अला, रहमते-आलम[९]!

४शहरों के नाम '५ताज और तख्त, ६ मुकुट, ७श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित बादशाह, ८हजरत मोहम्मद को कहते हैं, ९ संसार के लिये (या संसार पर) दया करने वाला।

◆

कौन आयेगा यहां कोई न आया होगा,
मेरा दरवाज़ा हवाओं ने हिलाया होगा!

दिले नादां न धड़क, ए दिले नादां न धड़क,
कोई ख़त ले के पड़ोसी के घर आया होगा!

इस गुलिस्तां की यही रीत है ऐ शाख़े-गुल,
तूने जिस फूल को पाला वो पराया होगा!

दिल की क़िस्मत ही में लिक्खा था अँधेरा शायद,
वर्ना मस्जिद का दिया किसने बुझाया होगा!

गुल से लिपटी हुई तितली को गिराकर देखो,
आँधियो! तुमने दरख़्तों[1] को गिराया होगा!

खेलने के लिए बच्चे निकल आए होंगे,
अब उसकी गली में उत्तर आया होगा!

में मत याद करो अपना मकाँ,
ने उसे तोड़ गिराया होगा!

एक पैकर[३] में सिमटकर रह गईं,
खूबियां, जेबाइयां[४] रानाईयां![५]

रह गईं इक तिफ्ले-मक्तब के हुजूर,[६]
हिकमतें, आगाहियां, दानाईयां![७]

जख्म दिल के फिर हरे करने लगीं,
बदलियां, बरखारुतें, पुरवाईयां!

दीदओ-दानिश्ता[८] उनके सामने,
लग्जिशें,[९] नाकामियां, पस्पाईयां![१०]

उनसे मिलकर और भी कुछ बढ़ गईं,
उलझनें, फिक्रें, *क़यास आराईयां*![११]

कैफ पैदा कर समन्दर की तरह,
वुसअतें,[१२] खामोशियां, गहराईयां!

---

३. रूप ४. शोभा (बहुवचन) ५. सुन्दरता (बहुवचन) ६. पाठशाला के बच्चे के समक्ष ७. बुद्धिमानी (बहुवचन) ८. जानबूझकर ९. चूक (गल्तियां) १०. असफलताऐं (पीड़ित) ११. अनुमान (बहुवचन) १२. विस्तार



कौन आयेगा यहां कोई न आया होगा,
मेरा दरवाजा हवाओं ने हिलाया होगा!

दिले नादां न धड़क, ए दिले नादां न धड़क,
कोई ख़त ले के पड़ोसी के घर आया होगा!

इस गुलिस्तां की यही रीत है ऐ शाखे-गुल,
तूने जिस फूल को पाला वो पराया होगा!

दिल की क़िस्मत ही में लिक्खा था अंधेरा शायद,
वर्ना मस्जिद का दिया किसने बुझाया होगा!

गुल से लिपटी हुई तितली को गिराकर देखो,
आंधियो! तुमने दरख़्तों[1] को गिराया होगा!

खेलने के लिए बच्चे निकल आए होंगे,
चांद अब उसकी गली में उत्तर आया होगा!

कैफ़ परदेश में मत याद करो अपना मकां,
अब के बारिश ने उसे तोड़ गिराया होगा!

---

१. वृक्ष (बहुवचन)

◆
सिर्फ़ इतने जुर्म पर हंगामा होता जाय है,
तेरा दीवाना तिरी गलियों में देखा जाय है!

मैकशो[1] आगे बढ़ो तश्ना लबों[2] आगे बढ़ो,
अपना हक मांगा नहीं जाता है छीना जाय है!

दिलबरों के भेष में फिरते है चोरों के गिरोह,
जागते रहियो कि इन रातों में लूटा जाय है!

तेरा मैखाना है या खैरात खाना साकिया,
इस तरह मिलता है बादा[3] जैसे बख्शा जाय है!

अब नहीं तो और कब मस्ती मिलेगी साकिया,
अब तो ये अगूर का मौसम भी गुजरा जाय है!

आप किस-किस को भला सूली चढ़ाते जायेंगे,
अब तो सारा शहर ही मन्सूर[4] बनता जाय है!

---

१. पीने वाले २. प्यासे लोगो ३. शराब ४. मन्सूर एक ऐतिहासिक मत का नाम है। जिसे सच बोलने के जुर्म में सूली पर चढ़ा दिया गया था।



दिल से खेलने वाले बाज आ लड़कपन से,
आईने की हस्ती क्या टूट जाएगा छन से!

शब को चांद बन-बन कर झांकता है इक चहरा,
नीम और इमली की पत्तियों की चिलमन से!

इत्र जैसी खुशबू है, बर्फ जैसी ठंडक है,
ये हवाएं आती हैं जाने किसके आंगन से!

मौत के पसीने में जिन्दगी की लहरें हैं,
वो हवाएं देते हैं, शायद अपने दामन से!

अपने कैफ़ साहब का हाल कुछ निराला है,
शैख़ से अदावत है, जंग है बरहमन से!



दाग दुनिया ने दिये, ज़ख्म ज़माने से मिले,
हमको तोहफे ये, तुम्हें दोस्त बनाने मे मिले!

हम तरसते ही, तरसते ही, तरसते ही रहे,
वो फ़लाने से, फलाने से फलाने से मिले!

ख़ुद से मिल जाते तो चाहत का भरम रह जाता,
क्या मिले आप जो लोगों के मिलाने से मिले!

कभी लिखवाने गये ख़त, कभी पढ़वाने गये,
हम हसीनों से इसी हीले-बहाने से मिले!

इक नया जख्म मिला, एक नई उम्र मिली,
जब किसी शहर में कुछ यार पुराने-से मिले!

एक हम ही नहीं फिरते हैं लिये किस्सए गम,
उनके ख़ामोश लबों पर भी फसाने- से मिले!

कैसे मानें के उन्हें भूल गया तू ऐ कैफ़,
उनके ख़त आज हमें तेरे सिरहाने से मिले!

◆

तेरा चेहरा कितना सुहाना लगता है,
तेरे आगे चाँद पुराना लगता है!

तिरछे-तिरछे तीर नजर के लगते हैं,
सीधा-सीधा दिल पे निशाना लगता है!

आग का क्या है पल दो पल में लगती है,
बुझते-बुझते एक जमाना लगता है!

पाँव न बाँधा पंछी का पर बाँधा है,
आज का बच्चा कितना सयाना लगता है!

सच तो ये है फूल का दिल ही छलनी है,
हँसता चेहरा एक बहाना लगता है!

कैफ़ बता क्या तेरी गजल में जादू है,
बच्चा-बच्चा तेरा दिवाना लगता है।



ख़ानकाह[1] में सूफ़ी मुँह छुपाये बैठा है,
ग़ालिबन[2] ज़माने से मात खाये बैठा है!!

क़त्ल तो नहीं बदला, क़त्ल की अदा बदली,
तीर की जगह क़ातिल, साज उठाए बैठा है!

उनके चाहने वाले धूप-धूप फिरते हैं,
ग़ैर उनके कूचे में साए-साए बैठा है!

वाए, आशिके नादाँ! कायनात[3] में तेरी,
इक शिकस्ता शीशे को दिल बनाए बैठा है!

---

१. वह स्थान जहां साधु-उपासक बैठकर उपासना करते हैं। २. सम्भवतः ३



जिस्म पर बाक़ी ये सर है क्या करूं,
दस्ते-कातिल वे हुनर है क्या करूं!!

चाहता हूं फूंक दूं इस शहर को...,
शहर में उनका भी घर है क्या करूं!

वो तो सौ-सौ मर्तबा चाहें मुझे,
मेरी चाहत में कसर है क्या करूं!

पांव में जंजीर, कांटे, आबले...,
और फिर हुक्मे-सफर है क्या करूं!

कैफ का दिल, कैफ का दिल है मगर,
वो नजर फिर वो नज़र है क्या करूं!

कैफ मैं हूं एक नूरानी[१] किताब...,
पढ़ने वाला कम नजर है क्या करूं!

---

१. दिव्य



थोड़ा सा अक्स [1] चाँद के पैकर [2] में डाल दे,
तू आके जान रात के मन्जर [3] में डाल दे!

जिस दिन मिरी जबीं किसी दहलीज पर झुके,
उस दिन ख़ुदा शिगाफ़ [4] मिरे सर में डाल दे!

अल्लाह तेरे साथ है, मल्लाह को न देख,
ये टूटी-फूटी नाव समन्दर में डाल दे!

आ तेरे मालो-जर[5] को मैं तक्दीस-[6] बख़्श दूँ,
ला अपना मालो-जर मिरी ठोकर में डाल दे!

भाग ऐसे रहनुमा से जो लगता है ख़िज़्र[7] सा,
जाने ये किस जगह तुझे चक्कर में डाल दे!

इससे तिरे मकान का मन्जर है बदनुमा,
चिन्गारी मेरे फूस के छप्पर में डाल दे!

मैंने पनाह दी तुझे बारिश की रात में,
तू जाते-जाते आग मिरे घर में डाल दे!

ऐ कैफ़ जागते तुझे पिछला पहर हुआ,
अब लाश जैसे जिस्म को बिस्तर में डाल दे!

---

१. बिम्ब २. आकृति ३. दृश्य ४. छिद्र (सूराख़) ५. धन-दौलत ६. पवित्रता ७. भटके हूओं को राह दिखाने वाला।

◆

हम पर्दा दारिए ग़मे-जानां[1] में रह गये!
अक्सर उलझ के हाथ गरेवां में रह गये!!

हर कैस[2] के लिए हैं चरागे-रहे-वफा,[3]
मेरे वो नक्शे-पा जो बयाबां में रह गये!

इतने कुसूर पर हमें जिन्दां[4] हुआ नसीब,
भूले से एक रात गुलिस्तां में रह गये!

यारों ने मयकदे में गुज़ारी तमाम रात,
ऐ कैफ तुम तिलावते[5] कुरआं में रह गये!

---

१. प्रिया के दुख को छुपाना २. मजनूं जो लैला के वियोग में पागलों की तरह मारा-मारा फिरता था ३. प्रेम मार्ग के दिये ४. कारागार जे़ल ५. कुरआन का पाठ करना



कुटिया में कौन आयेगा इस तीरगी[1] के साथ,
अब ये किवाड़ बंद करो खामुशी के साथ!

साया है कम खजूर के ऊंचे दरख्त का,
उम्मीद बांधिये न बड़े आदमी के साथ!

चलते हैं बचके शैखो-बरहमन के साये से,
अपना यही अमल है बुरे आदमी के साथ!

शाइस्तगाने शहर[2] मुझे ख्वाह कुछ कहें,
सड़कों का हुस्न है मिरी आवारगी के साथ!

लिखता है गम की बात मसर्रत[3] के मूड में,
मख्सूस[4] है ये तर्ज फकत कैफ ही के साथ।

---

१. अंधकार २ शहर के समझदार लोग (गणमान्य नागरिक) ३ प्रसन्नता ४. विशिष्ट



धीरे हाथ लगाओ रे,
छिल जायेंगे घाओ रे!

मैं तो नहीं हूं कोई रसूल,[1]
यूं न करो पथराओ रे!

किसका लुहू है सडकों पर,
देखो ये छिडकाओ रे!

लोग हमें समझाए ना,
लोगों को समझाओ रे!

चांद-सितारे दिल का मोल,
यूं न गिराओ भाओ रे!

आग लगी है तन मन में,
कैफ की ग़ज़लें गाओ रे!

---

१ ईश-दूत



तुमसे न मिल के खुश है, वो दावा किधर गया,
दो रोज में गुलाब सा चहरा उतर गया!

जाने-बहार तुमने वो कांटे चुभोए हैं,
मैं हर गुले-शिगुफ्ता[1] को छूने से डर गया!

इस दिल के टूटने का मुझे कोई गम नहीं,
अच्छा हुआ के पाप कटा, दर्दे सर गया!

मैं भी समझ रहा हूं के तुम, तुम नहीं रहे,
तुम भी ये सोच लो के मिरा कैफ मर गया!

दो शैर

मयकदे के दर पे लिख दे साकिया
इसमें बस अल्लाह वाला जायेगा।

छा रहा है उनकी आंखों का नशा,
मुझको अब किससे सम्भाला जायेगा।

---

१ पूर्ण खिला हुआ फूल।

◆

हमको दीवाना जान के क्या-क्या, जुल्म न ढाया लोगों ने,
दीन छुडाया, धरम छुड़ाया, देश छुडाया लोगों ने!

तेरी गली में आ निकले थे, दोष हमारा इतना था,
पत्थर मारे, तोहमत बांधी, ऐब लगाया लोगों ने!

तेरी लटों में सो लेते थे बेघर आशिक, बेघर लोग,
बूढ़े बरगद आज तुझे भी काट गिराया लोगों ने!

नूरे-सहर[१] ने निकहते गुल ने[२], रंगे शफ़क[३] ने कह दी बात,
कितना-कितना मेरी जबां पर कुफ्ल[४] लगाया लोगों ने!

मीर तकी[५] के रंग का गाजा[६] रूए-ग़जल[७] पर आ न सका,
कैफ हमारे मीर तकी का रंग उडाया लोगों ने!

---

१. भोर का प्रकाश २. फूल की ख़ुशबू ३. उषा की लालिमा ४. ताला ५. मीरतकी मीर-उर्दू के महान शायर ६. सौंदर्य प्रसाधन जो महिलाएं गालों पर लगाती है (Rose)
७. ग़ज़ल का मुख



जिन्दगी है यूँ ख़ाली जिन्दगी के ख़्वाबों से,
जैसे कोई तस्वीरें नोच ले किताबों से!

छोड़ इन हुजूरों को, भाग इन जनाबों से,
क्या उम्मीद ख़ुशबू की कागजी गुलाबों से!

चाँद मत कहो उसको बल्कि यूँ कहो यारो,
झाँकता है इक कातिल अब्र की निकाबों से![1]

अपनी जेब से पीकर देखिये कभी ऐ कैफ़,
गम गलत नहीं होते, मुफ्त की शराबों से!

---

१. बादलों की ओट (पर्दे) में

◆

नफ़स नफ़स[1] है मुहब्बत किसी को क्या मालूम,
हयात[2] खुद है इबादत किसी को क्या मालूम!

समझ रहा है ज़माना मुझी को दीवाना,
उन अँखड़ियों की शरारत किसी को क्या मालूम!

हम उस गली से गुजरते हैं बेनियाज़ाना[3],
ये आशिकों की सियासत किसी को क्या मालूम!

वही जो आज ख़फा हैं उन्हीं ने मेरे लिये,
उठाई है जो मुसीबत किसी को क्या मालूम!

किसी ने हाल जो पूछा निकल पड़े आंसू,
हमारे दिल की नजाकत किसी को क्या मालूम!

---

१. सांस-सांस २. जीवन ३. निरपेक्ष भाव से



मैं हूँ बाग़ी तो मुझे ख्वाहिशे जन्नत भी नहीं,
मेरे माबूद[1] मगर इतनी तिजारत भी नहीं!

कर्ज का नाम भी क्या चीज हुआ करता है,
आज साकी की निगाहों में शरारत भी नहीं!

क्या मुहब्बत के सिले में ये दो आलम[2] लूंगा,
ये दो आलम तो मिरी खाक की कीमत भी नहीं!

वो भी सरमाया-परस्तों[3] की तिजोरी में है बन्द,
मेरे महबूब मिरे पास मुहब्बत भी नहीं!

दो शैर

मेरे गीत जब उनके होंट तक गये होंगे ,
कितने गीतकारों के दिल धड़क गये होंगे।

जिन को छोड़ आया था कमसिनी के मौसम में,
अब तो उन दरख्तों के फल भी पक गए होगें।

---

१. ख़ुदा २. दोनों जहान ३. धन दौलत के पुजारियों



धड़कनों की नगरी में वलवलों की बस्ती में,
हमने घर बनाया है जलजलों की बस्ती में!

ठंडे-ठंडे गीतों से दिल के जख्म भरता हूं,
बर्फ लेके आया हूं दिल जलों की बस्ती में!

लाओ भेज दूं अपना कोई तारे-पैराहन[1],
कैस[2] कब से नंगा है जंगलों की बस्ती में!

गालियों की बारिश है, पत्थरों की आंधी है,
एक मैं बुरा निकला सब भलों की बस्ती में!

आकिलों[3] की दुनिया में कैफ खोजते क्या हो,
हिकमतें तलाशो तुम पागलों की बस्ती में!

---

१. परिधान (वस्त्रों) का टुकड़ा २. मजनूं ३. बुद्धिमानों



तने-तन्हा[1] मुकाबिल हो रहा हूं मै हजारों से,
हसीनों से, रकीबों[2] से, गमों से, गम गुसारों[3] से!

उन्हें मै छीनकर लाया हूं कितने दावेदारों से,
शफक[4] से, चांदनी रातों से, फूलों से, सितारों से!

सुने कोई तो अब भी रोशनी आवाज देती है,
पहाड़ों से, गुफाओं से, बयावानों से, गारों[5] से!

हमारे दागे-दिल, जख्मे-जिगर कुछ मिलते-जुलते हैं,
गुलों से , गुलरुख़ों से, महवशों[6] से, माहपारों[7] से!

कभी होता नहीं, महसूस वो यूं कत्ल करते हैं,
निगाहों से, कनखियों से, अदाओं से, इशारों से!

---

१. अकेला २. विरोधियों (एक ही प्रेमिका के दो प्रेमी आपस में एक दूसरे के रकीब कहलाते हैं ३. दुख दर्द के सहभागी ४. उषा ५. गुफाओं ६. चन्द्र-सदृश्य ७. चाँद के टुकड़े



झूम के जब रिन्दों[1] ने पिलादी,
शैख़[2] ने चुपके-चुपके दुआ दी!

एक कमी थी ताजमहल में,
मैंने तिरी तस्वीर लगा दी!

आपने झूठा वादा करके,
आज हमारी उम्र बढ़ा दी!

हाय ये उनका तर्जे मुहब्बत[3],
आंख से बस इक बूंद गिरा दी!

---

१. शराबियों २. बुजुर्ग, सरदार ३. प्रेम का ढंग



कुछ अजीब आलम है, दिल का आजकल बाबा,
काटती है मौसीकी[१] डसती है गजल बाबा!

ख़ैर जो भी कुछ निकले इसका माहसल बाबा,[२]
हम बनाके बैठे हैं रेत का महल बाबा!

तेरी ख़ुश नसीबी पर क्यों पड़े बुरा साया,
हम सियाह बख़्तों[३] से दूर हट के चल बाबा!

हम गुनाहगारों पर तन्ज[४] कर न ऐ जाहिद[५],
जा तुझे मुबारक हो दस्तरे-अमल[६] बाबा!

कैफ इस जमाने में आफ़ियत[७] है जंगल में,
अपनी आबरू लेकर शहर से निकल बाबा!

---

१. संगीत २. परिणाम ३. दीन-दुखियों, अभागों ४. व्यंग ५. तपस्वी ६. नेक काम करने की अधिकता ७. सुरक्षा



सूरते महफिल[१] हुई तन्हाईयां,
आहटें, रूपोशियां[२] परछाईयां!

चुन लिया एक-एक कांटा राह का,
हैं मुबारक ये बरहना[३] पाईयां!

अज़्मते-सुकरातो ईसा[४] की कसम,
दार[५] के साये में है दाराईयां![६]

कद्रदाने -हुस्न[७] है बैरूने बज़्म[८],
यूं भी की जाती हैं कद्र अफ्जाईयां[९]

चारागर[१०] मरहम भरेगा तो कहां,
रूह तक है ज़ख्म की गहराईयां!

कैफ को दागे-जिगर बख्शे गये,
अल्ला-अल्ला ये करम फरमाईयां!

१.. महफिलों के समान २. अदृश्य होना ३. नंगे पांव ४. सुकरात और ईसा की महानता ५. सूली (फांसी का तख्ता) ६. बादशाही ७. सौन्दर्य के पुजारी, ८. सभा से बाहर ९. सम्मान, १०. चिकित्सक



ये दाढ़ियाँ ये तिलकधारियाँ नहीं चलतीं,
हमारे अहद[1] में मक्कारियाँ नहीं चलतीं!

कबीले वालों के दिल जोड़िये मिरे सरदार,
सरों को काट के सरदारियाँ नहीं चलतीं!

बुरा न मान अगर यार कुछ बुरा कह दे,
दिलों के खेल में खुद्दारियाँ[2] नहीं चलतीं!

छलक-छलक पड़ीं आँखों की गागरें अक्सर,
सम्भल-सम्भल के ये पन्हारियाँ नहीं चलतीं!

जनाबे कैफ़ ये दिल्ली है मीरो-ग़ालिब की,
यहाँ किसी की तरफ़दारियाँ नहीं चलतीं!

---

१. काल २. स्वाभिमान (बहुवचन)



ऐ काश किसी संग[1] से टकराने का सर जाय,
कुछ कर्ज तो इस शहर के लोगों का उतर जाय!

इतनी सी इजाज़त के तिरा तालिबे-दीदार[2],
बिन देखे तुझे तेरे मोहल्ले से गुजर जाय!

यूँ मेरी वफ़ा इश्क़ में बर्बाद हुई है...
जैसे कोई मुफ़लिस किसी फुटपाथ पे मर जाय!

है कैफ के कुछ टोंक[3] में रहने की जरूरत,
शायद के यह बिगड़ा हुआ फनकार[4] सुधर जाय!

---

१. पत्थर २. दर्शनाभिलाषी ३. राजस्थान की एक पुरानी रियासत जहाँ मिर्ज़ा ग़ालिब कुछ दिन रहे हैं। ४. कलाकार



सब खत्म गुफ्तगू-ओ[1] मुलाकात हो गई,
जो गैर चाहते थे वही बात हो गई!

वो और सूए गैर[2] मुहब्बत भरी नजर,
ऐ जिन्दगी! सलाम बडी बात हो गई!

दिन भी गुजारना है तडप कर इसी तरह,
सोजा दिले-हजीं[3] के बहुत रात हो गई!

रूस्वा[4] हुआ है कैफ जमाने में कू ब कू,[5]
अब आशिकी में इज्जते सादात हो गई![6]

---

१. बातचीत २. गैर (दूसरे) की ओर ३. दुखी हृदय ४. बदनाम ५. गली-गली
६. मान-मर्यादा बढ़ गई



तुझे कौन जानता था मिरी दोस्ती से पहले,
तिरा हुस्न कुछ नहीं था मिरी शायरी से पहले!

इधर आ रक़ीब[1] मेरे, मैं तुझे गले गला लूं,
मिरा इश्क़ बे- मजा था तिरी दुश्मनी से पहले!

कई ख़ुशख़िराम[2] गुजरे कई इन्किलाब आये,
न उठी मगर क़यामत तिरी कमसिनी[3] से पहले!

मेरी सुब्ह के सितारे तुझे ढूंढती है आंखें,
ये कठोर शब[4] न डस ले, तेरी रोशनी से पहले!

---

१. विरोधी शत्रु २. सुन्दर चालवाली ३. कम उम्र ४. रात्रि



इंतिज़ार की शब में चिलमनें[1] सरकती हैं,
चौंकते हैं दरवाज़े, सीढ़ियां धड़कती हैं!

आज उनका ख़त आया, चांद से लिफाफे में,
रात के अँधेरे में चूड़ियां चमकती हैं!

चाँदनी के बिस्तर पर रात जब चमकती है,
बिन किसी के खनकाए चूड़ियां खनकती हैं!

बार-बार आती हैं उस गली की आवाज़ें,
पांव डगमगाते हैं पिंडलियां लचकती हैं!

आज मेरी रग-रग में ख़ून गुनगुनाता है,
जाने किन फसानों[2] की सुर्ख़ियां[3] झलकती हैं!

---

१. पर्दे २. काल्पनिक कहानियां ३. शीर्षक

◆

बात ये सुनी हमने मनचले फ़क़ीरों से,
इश्क़-विश्क मत कीजे शहर के अमीरों से!

कौन है ये दीवाना तेरे घर के पास आकर,
पूछता है अपना घर सारे राहगीरों से!

आपके सितम पर भी लोग वाह कहते हैं,
आपने सदाक़्त[1] भी छीन ली जमीरों[2] से!

मद्रसे[3] के लड़कों को ये नवेद[4] पहुंचा दो,
आके कुछ सबक ले लें मयकदे[5] के पीरों[6] से।

उसकी आरजूओं से बाज आईये ऐ कैफ़
लौट आईये ऐ कैफ! ख्वाब के जजीरों[7] से।

---

१. सत्यता २. अन्तरआत्मा (बहुवचन) ३. पाठशाला ४. शुभ सदेश ५. मदिरालय
६. बुजुर्गों ७. टापुओं से



इस तरह मुहब्बत में दिल पे हुक्मरानी है,
दिल नहीं मिरा गोया उनकी राजधानी है!

घास के घरौंदे से ज़ोर आज़माई क्या,
आँधियाँ भी पगली हैं, बर्क़[1] भी दीवानी है!

शायद उनके दामन ने पोंछ दीं मिरी आँखें,
आज मेरे अश्कों का रंग ज़ाफ़रानी[2] है!

पूछते हो क्या बाबा क्या हुआ दिले-ज़िन्दा,
वो मिरा दिले ज़िन्दा आज आँजहानी[3] है!

कैफ़ तुझको दुनिया ने क्या से क्या बना डाला,
यार अब तिरे मुँह पर रंग है न पानी है!

---

१. बिजली २. केसरिया ३. मृतक, परलोकवासी, दिवंगत

◆

काम यही है शाम-सबेरे,
तेरी गली के सौ- सौ फेरे!

सामने वो है ज़ुल्फ़ बिखेरे,
कितने हसीं हैं आज अँधेरे!

हम तो हैं तेरे पूजने वाले,
पाँव न पड़वा तेरे-मेरे!

दिल को चुराया, ख़ैर चुराया
आँख चुराकर जा न लुटेरे!

शहर की सूनी फुटपाथों पर,
देख हमारे रैन बसेरे!



बेताबिए-फ़िराक[1] को बहलाके सो गया;
दिल से तिरे ख़याल को लिपटा के सो गया!

पापन कठोर रात ने जुम्बिश[2] न की जरा,
आख़िर को इस पहाड़ से टकरा के सो गया!

ताजा-सा इक मजार है बेनामो-बेचराग,
जागा हुआ गरीब कोई आके सो गया!

ऐ कैफ! यूं फ़िराक[3] की रातें गुजार दीं,
मैं दिल को और दिल मुझे समझा के सो गया!

---

१. विरह की व्याकुलता २. हिलना-डुलना ३. विरह, जुदाई



ये जश्नेसोहबते यारां[1] बहुत है,
घड़ी भर दर्द का दर्मां[2] बहुत है!

जहां तक सुब्ह का तारा न निकले,
इक आंसू जीनते-मिजगां[3] बहुत है!

मिरा साक़ी मिरा सागर सलामत,
इलाजे-गर्दिशे दौरां[4] बहुत है!

मुईन ऐ कैफ जाने शायरी है,
ये नाम आराइशे दीवां[5] बहुत है!

---

१. मित्रों के संग उत्सव २. इलाज ३. पलकों की शोभा ४. बुरे दिनों का इलाज
५. दीवान को सुशोभित करना (शायरी की पुस्तक को दीवान कहते है)

◆

जब हमें मस्जिद जाना पड़ा है,
राह में इक मयख़ाना पड़ा है!

जाईये अब क्यों जानिबे सहरा[1],
शहर तो ख़ुद वीराना पड़ा है!

हम न पियेंगे भीक की साक़ी,
ले ये तिरा पैमाना पड़ा है!

हर्ज न हो तो देखते चलिये,
राह में इक दीवाना पड़ा है!

ख़त्म हुई सब रात की महफ़िल,
एक परे-पर्वाना[2] पड़ा है!

---

१. रेगिस्तान की ओर, सुनसान उजाड़ स्थान की तरफ़ २. पतंगे का पंख



न आया मज़ा शब की तन्हाईयों[1] में!
सहर[2] हो गई चन्द अंगड़ाईयों में!!

ग़ज़ब हो गया उनकी महफ़िल से आना,
घिरा जा रहा हूँ तमाशाईयों में!

मुझे मुस्कुरा-मुस्कुरा कर न देखो,
मिरे साथ तुम भी हो रुस्वाईयों[3] में!

अरे हँसने वालो ये नग़्मे नहीं है,
मिरे दिल की चीख़ें है शहनाईयों में!

वो ऐ कैफ़ जिस दिन से मेरे हुए हैं,
तो सारा ज़माना है शैदाईयों[4] में!

---

१. एकान्त, २. भोर, सुबह ३. बदनामियों ४. प्रशंसक, चाहने वाले



मिलते हैं जो सभी से अखलाक[1] आम करके,
यूं ही गुजर गये वो मुझको सलाम करके!

बाबा! तुम्हारे दर पर बरसों नहीं रहेंगे,
चल देंगे हम मुसाफ़िर शब भर क़याम करके!

देखो वो जान दे दी सूरज ने सर पटक कर,
काहे को चल दिये तुम तफरीहे शाम[2] करके!

अब वो कदम-कदम पर फितने उठा रहे हैं,
शर्मा रही है कुदरत महशर ख़िराम[3] करके!

ऐ कैफ कोहकन[4] हैं हम आज की सदी के,
जीते हैं काम करके, मरते हैं काम करके!

---

१. शिष्टाचार २. संध्या कालीन भ्रमण, मनोरंजन ३. प्रलय की चाल ४. श्रमिक, पहाड़ काटने वाले, फरहाद।

◆

उसका अन्दाज अभी तक है लड़कपन वाला,
मीठा लगता है उसे नीम वो आंगन वाला!

अब भी मेरे लिये चिलमन से निकल आता है,
सांवला फूल सा इक हाथ वो कंगन वाला!

बिजलियां आंखों की ज़ुल्फों की घटाएं लेकर,
तुम चले आओ तो मौसम रहे सावन वाला!

ताके बिछड़ें तो बिछड़ने का कुछ अहसास न हो,
हम से रक्खो तौर तरीका कोई दुश्मन वाला!



शायद किसी काबिल ये मिरा सर भी नहीं है,
किस्मत में तिरे पाँव की ठोकर भी नहीं है!

माँ कहती है मर जाऊँ तो लायेगा कफ़न कौन,
या रब! मिरा बेटा अभी नौकर भी नहीं है!

तन्हाई में वो भी कभी रो लेते तो होंगे,
दिल उनका नहीं फूल तो पत्थर भी नहीं है!

क्यों चाँद को कहते हैं ये शाइर तिरा चहरा,
ये तो तिरे तलवों के बराबर भी नहीं है!

◆

क्यों फिर रहे हो कैफ़ ये ख़तरे का घर लिये,
ये कांच का शरीर ये कागज़ का सर लिये!

शोले निकल रहे हैं गुलाबों के जिस्म से,
तितली न जा क़रीब ये रेशम के पर लिये!

जाने बहार नाम है लेकिन ये काम है,
कलियाँ तराश लीं तो कभी गुल कतर लिये!

राँझा[1] बने हैं, क़ैस बने, कोहकन[2] बने,
हमने किसी के वास्ते सब रूप धर लिये!

ना मेहरबाने शहर[3] ने ठुकरा दिया मुझे,
मैं फिर रहा हूं अपना मकाँ दर-ब-दर लिये!

---

१. एक प्रसिद्ध प्रेमी जो हीर से प्रेम करता था, २. पहाड़ काटने वाला (फरहाद)
३. निर्दयी नगर



जब उठें झूम के बादल तो हमें ख़त लिखना,
सूखी नदियों में हो हलचल तो हमें ख़त लिखना!

दिलजला भाई कोई लेके बहिन का बदला,
जा बसाये कभी चम्बल तो हमें ख़त लिखना!

माँ ने आँगन में लगाई है जो अंगूर की बेल,
उसमें फूटे कोई कोंपल तो हमें ख़त लिखना!

गीत गाने लगें शम्सी[1] तो ख़ुदा से डरना,
शाइरी छोड़ दें बेकल[2] तो हमें ख़त लिखना!

घर से बेघर भी हैं हम कैफ़ से बेकैफ़[3] भी हम,
ऐसा देखो कोई पागल तो हमें ख़त लिखना।

---

१. शम्सी मीनाई जो केवल नज़्मों के शाइर हैं, २. बेकल उत्साही, ३.बेमज़ा, दुखी

◆

बीमारे-मुहब्बत की दवा है,के नहीं है,
मेरे किसी पहलू में कज़ा¹ है के नहीं है!

सच है कि मुहब्बत में हमें मौत ने मारा,
कुछ इसमें तुम्हारी भी ख़ता² है के नहीं है!

मत देख के फिरता हूँ,,तिरे हिज्र³ में ज़िन्दा,
ये पूछ के जीने में मज़ा है के नहीं है!

सुनता हूँ इक आहट-सी बराबर शबे वादा⁴,
जाने तेरे कदमों की सदा है के नहीं है!

यूँ ढूंढते फिरते हैं मिरे बाद मुझे वो,
ओ कैफ कहीं तेरा पता है के नहीं है!

१. मृत्यु २. दोष ३. विरह (जुदाई) ४. वचन की रात



जो मौ'तबर हूं तो इतना ही मोतबर हूं मै,
के सत्हे आब[1] पे ठहरा हुआ शजर[2] हूं मै!

कदम कदम पे तआकुब[3] में सैकड़ों दुश्मन,
के लाल किल्ले से निकला हुआ ज़फर हूं मैं!

मिरे वजूद[4] की शाहिद हैं अनगिनत सदियां,
हनोज तिश्नए तहकीक[6] इक ख़बर हूं मैं!

मुसाफिरों को दिखाता हूं राह इबरत[7] की,
फक़ीरे राह नहीं, शम्मे रह गुज़र[8] हूं मैं!

तिरा वजूद हकीकत मगर कहां है तू,
मिरा वजूद फकत वाहिमा[9] मगर हूं मैं!

---

१. पानी की सतह २. वृक्ष ३. पीछा करते हुए ४. अस्तित्व ५. साक्षी ६. आज भी पुष्टिकरण के लिये व्याकुल (प्यासी) ७. भलाई की राह, ८. राह को दिया ९. भ्रम

◆

गुम है निगाहे-शौक[1] हिजाबों[2] के शहर में,
पर्दों के, चिल्मनों के, निकाबों के शहर में!

जयपूर आके हमने ये समझा के आ गये,
सपनों के, कल्पनाओं के, ख़्वाबों के शहर में!

हर पैकरे-जमाल[3] है, इक पैकरे-बहार[4],
चम्पों के, मोगरों के, गुलाबों के शहर में!

ऐ तोबा! अलफ़िराक[5] के आये हुए है हम,
नश्शों के, मस्तियों के, शराबों के शहर में!

ऐ कैफ नौजवान हुआ जा रहा हूँ मैं,
रंगों के, मौसमों के, शबाबों[6] के शहर में!

---

१. प्रेम-दृष्टि २. लज्जा (पर्दा, बहुवचन) ३. सुन्दर शरीर ४. वसंत का रूप ५. फ़िराक का अर्थ वियोग है, अल प्रत्यय है। ६. यौवन (बहुवचन)



क्या-क्या ये हम से छेड़, नसीमें चमन[1] की है,
ख़ुशबू नफ़स-नफ़स[2] में तिरे पैरहन[3] की है!

मरने के बाद भी ये अदा बांकपन की है,
तनवीर[4] चांदनी में, हमारे कफ़न की है!

दैरो-हरम[5] की रोशनीयां बुझ चुकीं तमाम,
इक शम्मा रह गई जो तिरी अन्जुमन की है!

मुझको गमे-हयात[6] से फ़ारिग न जानिये,
होटों पे कुछ हंसी है, सो दीवानापन की है!

वारिस हुआ है कैफ़ रिवायाते इश्क[7] का,
अंदाज कैस[8] का है, अदा कोहकन[9] की है!

---

१. उपवन या बगिया की मन्द हवा, २. सांस ३. परिधान ४. चमक-प्रकाश ५. मंदिर-मस्जिद ६. जीवन के दुख ७. प्रेम की परम्परा ८. मजनूं ९. पत्थर तोड़ने वाला (इशारा फ़रहाद की तरफ़)



बाश[1] ऐ साकी! के तेरी अंजुमन खतरे में है,
जाम से शोला उठा, जामे-कुहन[2] खतरे में है!

था गरेबाँ ही गरेबाँ तक मिरा अगला जुनूँ,
लेकिन अबके पैरहन[3] का पैरहन ख़तरे में है!

मेरे आगे आबदीदा[4] हो के आया है कोई,
हाय मेरा आशिक़ाना बाँकपन खतरे में है!

कल तलक मन्सूर[5] था दारो-रसन[6] के सामने,
जिस जगह हम हैं वहाँ दारो-रसन खतरे में है!

बन्दगी नासेह[7] तुझे, तेरी नसीहत को सलाम,
तेरी सोहबत में मिरा, दीवानापन ख़तरे में है!

---

१. सावधान २. पुराना मदिरा-पात्र ३. परिधान ४. रोता हुआ (आंखों में आँसू लिये) ५. एक मत पुरुष का नाम ६. फांसी का फंदा और तख्ता (सूली) ७. उपदेशक (नसीहत करने वाला)



कभी शराब घटा देखकर न पी मैंने,
हर एक क़ैद, हर इक रस्म तोड़ दी मैंने!

निगाहे नाज जो देखी झुकी-झुकी मैंने,
न मानने की भी हर बात मान ली मैंने!

सुनी जो पाँव की आहट तो जाम फेंक दिया,
नज़र मिली तो सुराही भी तोड़ दी मैंने!

दुहाई दे के मुगन्नी[1] का हाथ रोक दिया,
इक आह खींच के मिजराब छीन ली मैंने!

बढ़े वो दामने रंगीं से पोंछने आँसू,
जब आस्तीन भी अपनी निचोड़ ली मैंने!

---

१. गायक



शहर में धूम है हम चाक गरेबानों की,
हमने तस्वीर बदल दी है बयाबानों की!

अब तो उनको भी बड़ी फ़िक्र है दीवानों की,
धज्जियाँ ढूँढते फिरते हैं गरेबानों की!

कूए-मैख़ाना¹ घड़ी भर को चला चल ज़ाहिद,
जाँच हो जाएगी मेरे, तिरे ईमानों की!

मयकदे के किसी गोशे² में पड़ा रहता है,
हिन्दुओं की है ये दुनिया न मुसलमानों की!

ले मेरी जाने-ग़ज़ल तू मिरे हमराह न चल,
चाँदनी रात नहीं, धूप है मैदानों की!

---

१. मदिरालय की ओर २. कोने (एकान्त) में



हाय, अन्जामे मुहब्बत मुझे मालूम न था,
ऐसी हो जाएगी हालत मुझे मालूम न था!

फूल हो जाएंगे कांटे, न सुना था मैंने,
चांद फैलाएगा जुल्मत[1] मुझे मालूम न था!

नाम ले-ले के सरे-राह पुकारूंगा उन्हें,
इतनी बढ़ जाएगी वहशत[2] मुझे मालूम न था!

एक नफ़रत की अदा, एक हिकारत[3] की नजर,
इतनी होगी मिरी किस्मत मुझे मालूम न था!

१. अंधकार २. दीवानगी ३. तिरस्कार



वहशते-दिल[1] ने सिखाई है ये तदबीर भी आज,
के जला दूं तेरे ख़त भी तिरी तहरीर भी आज!

देखना ये है कि अब शहर में क्या होता है,
शाख़े-गुल[2] भी है तिरे हाथ में शमशीर[3] भी आज!

इन्तिहा है मेरी बेबालो-परी[4] का शायद,
खोल दी है मिरे सैयाद[5] ने ज़ंजीर भी आज!

दिले-दीवाना बता तेरा इरादा क्या है,
ज़ुल्फ़ भी खींच रही है मुझे ज़ंजीर भी आज!

मयकदा आज हो आबाद के मस्जिद देखें,
कैफ़ की नज़्म भी है शैख़ की तकरीर भी आज!

---

१. दिल का पागलपन २. फूलों की डाल ३. एक प्रकार की तलवार ४. पंखहीनता ५. बहेलिया, जो पक्षियों को पकड़ता है।



तेरे होते जिसे फ़िक्रे-शराबो जाम है साक़ी,
वो रिन्दे ख़ाम[1], रिन्दे ख़ाम, रिन्दे ख़ाम है साक़ी!

अजां होने को है जामो-सुराही से चरागां कर,
के वक़्ते शाम, वक़्ते शाम, वक़्ते शाम है साक़ी!

घटा छाई हुई है, तू ख़फ़ा है, रिन्द प्यासे हैं,
ये क़त्ले आम, क़त्ले आम, क़त्ले आम है साक़ी!

मिरी क़िस्मत की मुझको कब मिलेगी मैं ये क्यों सोचूं,
ये तेरा काम, तेरा काम, तेरा काम है साक़ी!

---

१. नया: अनाड़ी, अनुभवहीन शराबी



हकीकत छुप गई अफ़साना बनके,
बहुत अच्छे रहे दीवाना बन के!

अंधेरों में रहे शैख़ो-बरहमन!
चरागे-काबओ-बुतख़ाना बनके!!

अजल[1] की नींद भी आशिक को आई,
ख़ुमारे-चश्मे-माशूकाना[2] बन के!

हर आंधी मेरी जानिब चल रही है,
नसीमे-कूचए जानानां[3] बन के!

---

१. मौत (मृत्यु) २. प्रेयसी की मदभरी आंखें ३. प्राण-प्रिया की गली की हवा

◆

तेरे होते जिसे फिक्रे-शराबो जाम है साकी,
वो रिन्दे ख़ाम[1], रिन्दे ख़ाम, रिन्दे ख़ाम है साक़ी!

अजाँ होने को है जामो-सुराही से चरागाँ कर,
के वक्ते शाम, वक्ते शाम, वक्ते शाम है साकी!

घटा छाई हुई है, तू ख़फ़ा है, रिन्द प्यासे है,
ये कत्ले आम, कत्ले आम, कत्ले आम है साकी!

मिरी किस्मत की मुझको कब मिलेगी मैं ये क्यों सोचूँ,
ये तेरा काम, तेरा काम, तेरा काम है साकी!

---

१. नया: अनाड़ी, अनुभवहीन शराबी



हकीकत छुप गई अफसाना बनके,
बहुत अच्छे रहे दीवाना बन के!

अंधेरों में रहे शैख़ो-बरहमन!
चराग़े-काबओ-बुतख़ाना बनके!!

अजल[1] की नींद भी आशिक को आई,
ख़ुमारे-चश्मे-माशूक़ाना[2] बन के!

हर आंधी मेरी जानिब चल रही है,
नसीमे-कूचए जानाना[3] बन के!

---

१. मौत (मृत्यु) २. प्रेयसी की मदभरी आंखें ३. प्राण-प्रिया की गली की हवा



जाने कैसा रोग लगा है, सूखा डन्ठल हो गया चांद,
रंगत पीली पड़ते-पड़ते, बिल्कुल पीला हो गया चांद!

जाने कौन था आने वाला, मुंह न दिखाया ज़ालिम ने,
रात को तारे गिनते-गिनते, आख़िर पागल हो गया चांद!

हंसता चेहरा सबने देखा, किसने देखी दिल की आग,
धीरे-धीरे जलते-जलते इक दिन काजल हो गया चांद!

माहवशों[1] की ख़ातिर उसने बदले कितने-कितने रूप,
इक दिन बिंदिया, इक दिन कंगन, इक दिन पायल हो गया चांद!

ख़ून-ख़राबा करके ज़मीं पर चांद पे इन्सां जा पहुंचा,
होगी वहां भी अब ख़ूरेज़ी समझो मक़्तल[2] हो गया चांद!

---

१. चन्द्रवदन (बहुवचन) २. वधस्थल

◆

दश्ते-बेआबो-शजर[1] है दोस्तो,
आओ गर अज्मे-सफर[2] है दोस्तो!

अपने चहरे से उठाता हू निकाब,
क्या कोई साहब नजर है दोस्तो!

ये तो है दैरो-हरम[3] का रास्ता,
मयकदा वो है, उधर है दोस्तो!

इक निगाहे-नाज ने क्या कर दिया,
जिन्दगी जेरो जबर[4] है दोस्तो!

---

१. जलहीन, वृक्षहीन जगल २. यात्रा-सकल्प, ३. मदिर-मस्जिद ४. ऊपर-नीचे (उलट-पलट, डावाडोल)


ये आज तूने क्या दिले-मजबूर कर दिया,
उस रूए रंग-रंग[1] को बेनूर कर दिया!

कुछ आ गया था चैन दिले-बेकरार को,
उनकी तसल्लियों ने बदस्तूर[2] कर दिया!

साकी उस एक जाम पे सदके हज़ार जाम,
जो एक जाम तूने मुझे चूर कर दिया!

चारागराने-इश्क[3] से अल्लाह की पनाह,
नाजुक से एक जख्म को नासूर कर दिया!

---

१. खूबसूरत चहरा २. पूर्ववत ३. प्रेमरोग की चिकित्सा करने वाले



सुनी गई न दिले-ख़ानुमा ख़राब[1] की बात,
किताब ही में रही दफ़्न सब किताब की बात!

उन्होंने फाड़ दिया ख़त पढ़ा-बढ़ा भी नहीं,
यहां तो सोच रहे थे किसी जवाब की बात!

तमाम शहर मिरे क़त्ल पर है आमादा,
ख़बर नहीं के ये है कौन से नवाब की बात!

हमारे ज़ख़्मे-जिगर यूँ खुले के दुनिया में,
गुलों का ज़िक्र छिड़ा चल पड़ी गुलाब की बात!

सितम है उनका सरापा करम[2], मैं क्यों सोचूं,
मुआमलाते-मुहब्बत में क्या हिसाब की बात!

---

१. टूटा हुआ दुखी हृदय २. उनका अत्याचार भी पूर्णतः दयाभाव है,

कोई ये हीलए-मासूम[3] तो जरा देखे,
बयाने-गम को समझते है वो शराब की बात!

अब इस तरह से किसी का ख़याल आता है,
के जैसे ख्वाब में याद आए कोई ख़्वाब की बात!

चली नमाज, गया रोजा, खत्म है तौबा,
घटाएं याद दिलाने लगीं शराब की बात!

सवाल ये था के अब इसके बाद क्या होगा,
दिये ने रख ली सरे-शाम, आफ्ताब[4] की बात!

---

३ भोलेपन के साथ बहाने बाजी ४. सूर्य



ग़म के मारों को कोई रूप सुनहरा न दिखा,
ऐ मेरे चाँद! ये हँसता हुआ चेहरा न दिखा!

न खुला एक भी दरवाज़ा मिरी दस्तक से,
कौन सा घर है जो इस शहर में बहरा न दिखा!

नहीं रुकते हैं जो चल पड़ते हैं चलने वाले,
हमसफ़र राह के दरियाओं को गहरा न दिखा!

इक हथेली है के जिसमें कभी मेंहदी न रची,
एक चेहरा है के जिस पर कभी सेहरा न दिखा!

दोस्त, जिन्दान[1] में भी अज़्मे-सफ़र[2] रखते हैं,
ये निगहबान, ये दरबान, ये पहरा न दिखा!

---

१. कारागार २. यात्रा का संकल्प



दिल के मुआमलात में कितना अजीब हूँ,
हद हो गई के आप ही अपना रकीब[1] हूँ!

महफ़िल में देखते हैं कुछ इस ज़ाविए[2] से वो,
हर शख़्स कह रहा है के मैं ख़ुशनसीब हूँ!

इफ़्लास[3] में भी ग़ैरते-रिन्दी[4] न जाएगी,
हरगिज़ न ये कहूँगा के साक़ी ग़रीब हूँ!

अक्सर शबे-फ़िराक़[5] वो कहते हैं कान में,
ग़ाफ़िल न हो मलूल[6], मैं तेरे क़रीब हूँ!

---

१. विरोधी २. कोण (दृष्टि) ३. विपन्नता ४. शराबी का स्वाभिमान ५. विरह-रात्रि ६. दुखी

◆

मत किसी से कीजिए यारी बहुत,
आज की दुनिया है व्यापारी बहुत!

वो हमारे हैं न हम उनके लिये,
दोनों जानिब है अदाकारी बहुत!

चार जानिब देखकर सच बोलिये,
आदमी फिरते हैं सरकारी बहुत!

कैफ साहब कोई मस्जिद देखिये,
मयकदे[1] में हो चुकी ख्वारी[2] बहुत!

---

१. मदिरालय २. अपमान



आपकी मुहब्बत में जान भी फ़िदा कर दी,
दिल ने इब्तिदा[1] की थी, हमने इन्तिहा[2] कर दी!

अब हवाएं ले जाए ख़ाक आशियाने[3] की,
बर्क़[4] की जो ख़िदमत थी, बर्क़ ने अदा कर दी!

आप ढूंढते रहिये चारए-मसीहाई[5],
आपके मरीज़ों की मौत ने दवा कर दी!

तीन शैर

फ़रिश्ते वक़्त से पहले अज़ाब देने लगे,
गली के लड़के पलटकर जवाब देने लगे।



जिस शहर में कैफ़ आजाता है कुछ लोग ये बातें करते हैं,
शैतान का टलना आसां है महमान का टलना मुश्किल है।



जब कहा है रोटी को चांद सा हंसी मैंने,
क़हक़हे लगाये हैं मस्ख़रे अदीबों ने।

---

१. आरम्भ २. अंत ३. नीड़ (घोंसला) ४. बिजली ५. इलाज (चिकित्सा) का साधन



क्या जाने क्या गुनाह मैं सर पर लिये मिला,
हर शख़्स अपने हाथ में पत्थर लिये मिला!

चमका रहे थे आज वो जर्रों[1] की किस्मतें,
सूरज भी उनके दर पे मुकद्दर लिये मिला!

कल जिसको मैंने फूल दिया था बसद खुलूस[2],
वो आज अपनी जेब में ख़न्जर लिये मिला!

दो शैर

चौराहे के इस पेड़ को मत काटिये लोगो,
यह है किसी मासूम परिन्दे की निशानी।



मंज़िल न कोई राह गुजर चाहता हूँ मैं,
अपने ही दिल तक एक सफर चाहता हूँ मैं।

---

१. रेत-कण २. स्नेह पूर्वक



खेल यही खेला तुमने लड़कपन से,
जो भी मिला शीशा, तोड़ दिया छन से!

मैं हूँ तिरा शायर, तू है ग़ज़ल मेरी,
मैं हूँ तिरे ग़म से, तू है मिरे फ़न से!

ख़म[1] है मेरे आगे, दैरो-हरम[2] दोनों,
कौन मगर उलझे शैख़ो बरहमन से!

दो शेर

उनको भी कोई यूँ ही सताए ख़ुदा करे,
लेकिन नहीं, वो वक़्त न आए ख़ुदा करे!

मेरे सभी ख़तों को जलाकर वो ख़ुश रहें,
दामन पे उनके आंच न आए ख़ुदा करे!

---

१. नत (झुके हुए) २. मंदिर-मस्जिद



वो एक ख़्वाब है उसका हुसूल नामुमकिन[1],
ये बात मैं भी समझता हूं दोस्तो लेकिन..!

हमारे नाम भी एक दिन ख़ुतूत[2] आते थे,
लिखे था कोई के दूभर है जिन्दगी तुम बिन!

ये दौर वो है के संजीदा[3] हो गये दोनों,
न अब जवान है रांझा न हीर है कमसिन!

वो इक नज़र जिसे समझे थे ज़िन्दगी अपनी,
अज़ाब[4] कर गई उम्रे- अज़ीज़[5] के दो दिन!

वो एक शख़्स[6] जो कातिल दिखाई देता है,
उसी को कैफ़ समझता है जाने क्यों मोहसिन![7]

---

१. जिसकी प्राप्ति असम्भव हो २. ख़त (पत्र) का बहुवचन ३. गंभीर ४. पाप (बोझ बन गई) ५. प्रिय आयु ६. व्यक्ति ७. हितैषी



उनकी निगाह में नहीं बन्दे का हाले जार[1] क्या,
माँगिये सुब्हो शाम क्यों छेड़िये बार-बार क्या!

काफ़िलए हयात[2] है, सब उसी सम्त को रवां,[3]
मौत की वादियों में है, सायाए जुल्फ़े-यार[4] क्या!

उन का सितम है या करम, इसका हिसाब क्या ज़ुरूर,
ऐ मेरे नामुराद दिल, इश्क़ में कारोबार क्या!

उनकी नजर के सामने उनकी गली में दफ़्न है,
अब भी तुझे सुकूं नहीं, ऐ दिले-बेक़रार क्या!

शब[5] को शराबो-आशिक़ी, सुब्ह को तौबओ नमाज़,[6]
कोई मिलेगा शहर में कैफ़ सा दीनदार[7] क्या!

---

१. बुरा हाल २. जीवन यात्राएं ३. उसी दिशा में अग्रसर ४. प्रिया के केशों की छाँव
५. रात्रि ६. प्रायश्चित और नमाज़ ७. धार्मिक



जिस पे तिरी शमशीर[1] नहीं है,
उसकी कोई तौकीर[2] नहीं है!

उसने ये कह के फेर दिया ख़त,
ख़ून से क्यों तहरीर[3] नहीं है!

जख़्मे जिगर में झांक के देखो,
क्या ये तुम्हारा तीर नहीं है!

शहर में यौमे अम्न[4] है वाइज़,[5]
आज तिरी तकरीर नहीं है!

---

१. एक हथियार का नाम, तलवार २. प्रतिष्ठा ३. लिखित ४. शांति दिवस
५. धर्मोपदेशक



ये मिजाजे यार को क्या हुआ, उन्हें मुझसे प्यार है आजकल,
मेरी गुफ़्तगू[1] मिरी जुस्तजू[2] मिरा इन्तिज़ार है आजकल!

तिरे ख़त निकाल के देखना, कभी चूमना कभी सोचना,
यही मश्ग़ला[3] , यही सिलसिला यही कारोबार है आजकल!

न अकेला घर से निकल मियाँ, जरा देखभाल के चल मियाँ,
बड़ी अबतरी[4], बड़ी रहज़नी, बड़ी लूटमार है आजकल!

इसे कत्ल कर, उसे कत्ल कर, तुझे सात ख़ून मुआफ हैं,
तिरी सल्तनत तिरा दबदबा, तिरा इक्तिदार[5] है आजकल!

अरे कैफ़ कल तो तू रिन्द[6] था, मिरे यार तुझको ये क्या हुआ,
बड़ा मजहबी, बड़ा पारसा, बडा दीनदार है आजकल!

---

१. बातचीत २. तलाश ३. व्यस्तता, काम ४. बदहाली, अराजकता ५. सत्ता ६. शराबी



झगड़े है इबादत ख़ानों[1] में, धोके है ज़ियारत गाहों[2] में,
अल्लाह के बन्दो हमसे मिलो ईमान है हम गुमराहों में!

सारा ही ज़माना कहता है, सफ्फ़ाक[3] तुम्हें क़त्ताल[4] तुम्हें,
माना के ये सब अफ़वाहें है कुछ बात तो है अफ़वाहों में!

दो दिन की ख़ुशी पर इतराना, दो रोज़ के ग़म से घबराना,
कोई भी न आली ज़र्फ़[5] मिला, इस शहर के आलीजाहों में![6]

वो कैफ वो इक आवारा मनुष, इस शहर को जबसे छोड़ गया,
हलचल न रही बाज़ारों में, गड़बड़ न रही चौराहों में!

---

१. पूजा स्थलों २. बुजुर्ग-सत की समाधि ३. निर्दयी ४. हत्यारा ५. वज़नदार व्यक्ति (धैर्यवान) ६. सभ्रान्तजन



होती नहीं मक्बूल तहज्जुद[1] की दुआ भी,
जबसे वो कशीदा[2] है कशीदा है ख़ुदा भी!

शहरों की नई रोशनीयाँ देखने वालो,
देखो तो कभी रोशनीए-गारे-हिरा भी[3]!

इस दौर के इंसान के दिल है वो चट्टानें,
पिघला नहीं सकता जिसे मूसा[4] का असा[5] भी!

मदफन[6] पे मिरे जश्ने चरागाँ तो अलग बात,
शायद न जलेगा कोई जुगनूं का दिया भी!

समझाते हैं नासेह[7] मुझे क्यों इश्क के नुक्ते,
पूछो के मियाँ तुमने कभी इश्क किया भी!

---

१. आधी रात के बाद पढ़ी जाने वाली विशेष नमाज २. नाराज ३. शहर मक्का में गुफा जहां, पैगम्बर साहब को ख़ुदा के संदेश आते थे ४. एक पैग़म्बर (ईशदूत) का नाम ५. हाथ में रखने वाला बैंत (छड़ी) ६. कब्र ७. नसीहत करने वाला उपदेशक



हमेशा एक प्यासी रूह की आवाज आती है,
कुओं से, पनघटों से, नद्दियों से, आवशारों[1] से!

न आए पर न आए वो, उन्हें क्या-क्या ख़बर भेजी,
लिफाफों से, खतों से, दुख भरे पर्चों से, तारों से!

ज़माने में कभी भी किस्मतें बदला नहीं करतीं,
उमीदों से, भरोसों से, दिलासों से, सहारों से!

वो दिन भी हाय क्या दिन थे, जब अपना भी तअल्लुक था,
दशहरों से, दिवाली से, बसन्तों से, बहारों से!

कभी पत्थर के दिल ऐ कैफ, पिघले हैं न पिघलेंगे,
मुनाजातों से, फरयादों से, चीखों से, पुकारों से!

---

१. झरनों (जल प्रपात)



जब तक न निकाबे-रुख़े जांनाना उठेगा,
हंगामा सरे काबाओ-बुतख़ाना उठेगा!

उठ जायेगी रौनक तिरी रंगीन गली की,
जब झाड़ के दामन तिरा दीवाना उठेगा!

तौकीर[1] शहीदाने मुहब्बत[2] की ये होगी,
पलकों पे जुलूसे -परे-परवाना[3] उठेगा!

कुछ शैर

तग आके सोचता हूं कि तर्के -वफ़ा करूं,
उन तक मगर ये बात न जाए ख़ुदा करे!



क्या जाने क्या गुनाह मैं सर पर लिये मिला,
हर शक्स अपने हाथ में पत्थर लिये मिला!

चमका रहे थे आज वो जर्रों की किस्मतें,
सूरज भी उनके दर पे मुकद्दर लिये मिला!

---

१. प्रतिष्ठा, मान-सम्मान २. प्रेम में अमर ३. पतगे के परों का जुलूस



चमक-दमक पे न कर ये गुरूर अंगारे,
तू राख़ बन के बिखर जाएगा मिरे प्यारे!

मकान तुमको मुबारक हो शहर के लोगो,
गुज़ार देंगे खुले जंगलों में बंजारे।

ख़ुदा करे के रहे बात मेरे कातिल की,
हर एक ज़ख़्म से फूटें लुहू के फव्वारे!

जमाले-यार[1] मुबारक हजारहा पर्दे,
निगाहे-शौक[2] सलामत, हज़ार नज़्ज़ारे!

हजार सर हों तो कुर्बां हर एक पत्थरपर,
तुम्हारे शहर के लड़कों को कौन ललकारे!

---

१. प्रिया का सौंदर्य, २. प्रेम-दृष्टि



तेरा चहरा सुबह का तारा लगता है,
सुबह का तारा कितना प्यारा लगता है!

तुमसे मिलकर इमली मीठी लगती है,
तुमसे बिछडकर शहद भी खारा लगता है!

रात हमारे साथ तू जागा करता है,
चांद बता तू कौन हमारा लगता है!

तितली चमन में फूल से लिपटी रहती है,
फिर भी चमन में फूल कुंआरा लगता है!

कैफ़ वो कल का कैफ कहां है आज मियां,
ये तो कोई वक़्त का मारा लगता है!



वो अपनी बज़्मेनाज़ की क़ीमत घटाए क्यों,
हम कौन से रईस है, हमको बुलाए क्यों !

क़ैची परों पे है के ज़रा फड़फड़ाए क्यों,
सोजन[1] लबों पे है के ज़रा चहचहाए क्यों !

उनकी गली ने पाँव में काँटे चुभो दिये,
इतने कुसूर पर के ज़रा डगमगाए क्यों !

गोदा गया था अपनी कलाई पे किसका नाम,
यह कल की बात आज उन्हें याद आए क्यों !

बरगद की छाँव में भी तो सोते है लोग बाग,
हम ढूंढते फिरें तिरी ज़ुल्फों के साए[2] क्यों !

तिफ़्लाने कूए-यार[3] करें मुझको संगसार[4],
मैंने सगे रकीब[5] पे पत्थर उठाए क्यों!

---

१. सुई, २. साया (बहुवचन) छाँव, ३. प्रेमिका की गली के बच्चे, ४. पत्थर मारना ५. दुश्मन



जी हां बजा ये आपकी सब उजरदारियां,
किसके लुहू की है ये गरेबां पे धारियां!

वो जाने-इन्तिज़ार न जाने कब आयेगा,
हसरत से देखता हूं गुज़रती सवारियाँ!

मुम्किन नहीं के अब मैं शिफ़ायाब[1] हो सकूं,
करने लगे हैं वो मिरी तीमार दारियां!

ऐ दिल तू उस गली की जिदें छोड़ता नहीं,
शायद अभी कुछ और भी बाक़ी है ख्वारियां[2]!

रखते हैं गाह-गाह, मिरे दिल पे अपना हाथ,
मतलब ये है के ख़त्म न हों बेकरारियां।

ऐ कैफ़ इन्किलाब है शायद इसी का नाम,
रिन्दों[3] में रिन्दियां है न यारों में यारियां!

---

१. स्वस्थ्य, २. अपमान, ३. शराबियों



दरो-दीवार पे शक्लें सी बनाने आई,
फिर ये बारिश मिरी तन्हाई चुराने आई!

जिन्दगी बाप की मानिन्द सजा देती है,
रहम दिल माँ की तरह, मौत बचाने आई!

आजकल फिर दिले-बेताब की बातें हैं वही,
हम तो समझे थे के कुछ अक्ल ठिकाने आई!

दिल में आहट सी हुई, रूह में दस्तक गूँजी,
किसकी ख़ुश्बू मुझे ये मेरे सिरहाने आई!

मैनें जब पहले-पहल, अपना वतन छोड़ा था,
दूर तक मुझको इक आवाज बुलाने आई!

तेरी मानिन्द तिरी याद भी जालिम निकली,
ज़ब भी आई है मिरा दिल ही दुखाने आई।

कुछ और शैर

लज्जते-जख्मे जिगर[1] बाकी है,
दस्ते-कातिल[2] का हुनर बाकी है!

मेरा घर कोई नहीं है लेकिन,
मेरे दिल में तिरा घर बाकी है!

आप गुजरे हैं इधर से शायद,
चांद पर गर्दे सफ़र[3] बाकी है!



दर्दे-फिराक[4] क्या किसी गमख्वार से कहो,
चुपके पड़े हुए दरो-दीवार से कहो!

तुझको भी देखना है, गमे-दीगरां[5] के बाद,
इतना न हो मलूल, गमे यार से कहो!

---

१. हृदय के घाव का स्वाद , २. हत्यारे हाथ, ३. यात्रा की धूल, ४. विरह-पीड़ा ,
५. अन्य दुख

गीत



आहट कदम कदम, तिरी ख़ुश्बू जगह जगह,
रुलवा रही है ख़ून के आंसू जगह जगह!

वो दूर आस्मान से लिपटी हुई ज़मीन,
याद आ गए मुझे तिरे बाज़ू जगह जगह!

थक-थक गई है उठके निगाहें तिरे बग़ैर,
दुख-दुख गई है फैल के बांहें तिरे बगैर!

वीरान जिन्दगी मिरी सुनसान ज़िन्दगी,
आंसू तिरे बग़ैर है आहें तिरे बगैर!

मेरे ख़यालो-ख़्वाब की जन्नत कहां है तू,
आंखों की नींद रूह की राहत कहां है तू!

ओ गुमशुदा बहार, मिरी गुमशुदा बहार,
तुझको पुकारती है, मुहब्बत कहाँ है तू!

रातें हुईं पहाड़ तिरे इन्तिज़ार में,
आजा करार बनके दिले बेक़रार में।

रग-रग में तेरी याद है, नस-नस में तेरी धुन,
दुनिया बदल गई तिरे दो दिन के प्यार में!

अपनी बेटियों के लिये



ख़ुश रंग तितलियां नजर आती है लड़कियाँ,
घर को बहिश्तजार[1] बनाती है लड़कियाँ!

या रब तिरी जमीन की रुदाद क्या कहूँ,
लड़के उजाड़ते हैं, बसाती है लड़कियाँ!

चावल है कहकशाँ[2] से, तो रोटी है चाँदसी,
क्या क्या हसीन चीज़ें खिलाती हैं लड़कियाँ!

स्कूल में भी करती है, उस्तानियों[3] के काम,
घर पर भी माँ का हाथ बटाती हैं लड़कियाँ!

मरियम की शक्ल में, कभी सीता के रूप में,
सूरज हथेलियों पे उठाती हैं लड़कियाँ!

ऐ कैफ देवियाँ है ख़ुलूसो-वफ़ा[4] की ये,
वो कौन है जिसे नहीं भाती है लड़कियाँ!

---

१. स्वर्ग, २. आकाश गंगा, ३. अध्यापिकाओं, ४. स्नेह और प्रेम

शवे-फुर्कत *



शवे-फुर्कत की रात हाय किसी की ये वेकसी!
इक शम्मा जल रही है धुआं है न रोशनी!!

पंछी भटक रहा है कफस[1] है न आशियां,[2]
मछली तड़प रही है कजा[3] है न ज़िन्दगी!

क्या जाने कब मिलेगा, मुसाफिर को कारवां,
परवाने को चराग अंधेरे को चन्द्रमा!

कोयल को अपना गीत पपीहे को अपना पी,
पारे को अपना चैन, सितारे को आस्मां!

आंखों में इंतिज़ार की मस्ती लिये हुए,
दिल डूबने लगा है किसी को पुकार के!

आंखे झपक रही है सितारों की दम बदम,
पापन कठोर रात के उठते नहीं कदम।

थम-थम के आ रही है मुहब्बत की हिचकियां,
रह-रह के डस रहा है किसी को किसी का गम।

---

* विरह की रात १. पिंजरा, २. घोंसला, ३. मौत

मेरी धरती



कितने धर्मों के परस्तार[1] है इस धरती पर,
अपने बच्चों को समेटे हुए माँ हो जैसे।

पूर्णमासी का ये निखरा हुआ सफ्फाफ[2] सा चाँद,
किसी दोशीज़ा[3] की बिन्दिया का निशां हो जैसे।

लहलहाते हुए खेतों का ये मीठा गेहूँ,
लज्जते-बोसए-शीरी दहां[4] हो जैसे।

---

१. अनुयायी २. धवल ३. कुंआरी कन्या ४. मधुर होटों के चुम्बन का स्वाद

ये अजन्ता ये एलोरा ये हसीं खजुराहो,
और ये ताजमहल जाने जहां हो जैसे।

ये वो धरती है के पिस-पिस के शफ़कज़ार[५] बनी,
ऐसी नैरंगिए-तक्दीरे हिना[६] क्या होगी।

ये वो धरती है के पैरों से लिपट जाती है,
और मेहमान नवाजी की अदा क्या होगी।

आर्यायों को भी सीने से लगाया इसने
और मुसलमानों को आंखों पे बिठाया इसने।

इसी धरती से मुहम्मद ने ये फर्माया था,
तेरी जानिब से मुझे ठण्डी हवा आती है।

इसी धरती पे चले आने को बोले थे हुसैन[७],
सच तो ये है के इसे रस्मे वफ़ा आती है।

ये वो धरती है के जिसके लिये हाफ़िज[८] ने कहा,
खाले हिन्दू[९] पे समरकंदो-बुख़ारा[१०] सदके।

ये वो धरती है के सरहद पे कदम रखते ही,
हो गया बख़्त सिकन्दर[११] का सितारा सदके।

---

५. उषा की लालिमा ६. मेंहदी का सौभाग्य ७. पैगम्बर मोहम्मद के नवासे (नाती) ८. फारसी के महान शाइर ९. हिन्दू के माथे का टीका १०. ईरान के दो प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर ११. सिकन्दर का भाग्य

हाय ये ईद, ये होली, ये दीवाली का शबाब,
फ़लके-पीर[१२] भी इक दिन को जवां है यारो।

ख़ुद जहांदीदा अरस्तु ने कहा था के ये ख़ाक,
सुर्मए-दीदए साहब नज़रां[१३] है यारो।

इसी धरती की तमन्ना में फिरा कोलम्बस,
ये ज़मी कूचए दिल[१४] कूचए जां[१५] है यारो।

जब दरख़्तों पे रहा करती थी जहज़ीबे जहां,[१६]
तब से आरास्तए-इल्मो-हुनर[१७] है ये ज़मी।

इसी धरती पे ये नौ उम्र हिमाला उभरा,
पहले इंसान की तारीख़ का घर है ये ज़मी।

हमने ईजाद[१८] किया पहले-पहल ये दीपक,
रात को दौलते-अनवार अता[१९] की हमने।

हमने ईजाद किया पहले-पहल ये ज़ीरो,
अश्क को शक़्ले-गौहरबार[२०] अता की हमने।

हमने ईजाद किया पहले-पहल ये पहिया,
पांव को तेजी-ए-रफ्तार अता की हमने।

---

१२. बूढ़े-बुजुर्ग १३. तेज़ नज़र वालों की आंख का सुर्मा १४. हृदय मार्ग १५. प्राण-मार्ग १६. संसार की सभ्यता १७. ज्ञान और कला से सुसज्जित १८. आविष्कृत १९. प्रकाश की सम्पदा प्रदान की २०. अश्रु को मोती का रूप प्रदान करना

दोस्तो! आओ के हंगामे सफ आराई है,[२१]
आज तारीख नये मोड़ पे ले आई है।

एक ही साथ मदावा[२२] हमें करना होगा,
दर्द भी एक है और ज़ख्म भी यक जाई है।[२३]

एकता, जोश है परवाज है अंगडाई है,
एकता, जोर है शक्ति है तवानाई है।[२४]

एकता भूख का हल, जहल[२५] का हल मौत का हल,
एकता चेहराए-तहजीब[२६] की रानाई है।[२७]

फूट, खेतों की मशीनों की किताबों की हरीफ,[२८]
फूट शमशान की हू, कब्र की तन्हाई है।

आज धरती का जुडा नील गगन से रिश्ता,
फर्के बंगालओ-पंजाब भला क्या मानी।[२९]

साजो नग्मा है ये मद्रास ये गुजरातो-बिहार,
दूरीए बर्बतो, मिजराब[३०] भला क्या मानी।

जब किसी शोख़ के जूड़े में न गुंथने पाये,
आबरूए-गुले शादाब[३१] भला क्या मानी।

---

२१. पंक्तिबद्ध होने का समय २२. इलाज २३ एक समान २४ऊर्जा २५ असभ्यता २६. सभ्यता का चेहरा २७ सुन्दरता २८ शत्रु २९. बंगाल और पंजाब के अंतर का क्या अर्थ ३०. बर्बत एक तंतु वाद्य का नाम है और मिज़राब, वह अंगूठी जिससे तार छेड़े जाते है ३१. ताजे खिले हुए फूल का मान

मज़दूरों का कोरस

हैयारे हैया, हैया रे हैया,
भूका है बाबा नंगी है मैया।
हैयारे हैया, हैया रे हैया!

खेतों में हम हैं, माटी का जीवन,
मीलों में हम है लोहे का ईंधन।
फौजों में हम है बांके सिपहिया,
हैयारे हैया, हैया रे हैया,

मथुरा बसाई, गोकुल बसाया,
गंगा का पनघट हमने बनाया।
हमसे है जिन्दा राधा कन्हैया,
हैयारे हैया, हैया रे हैया,

तेलों के चश्में हमने निकाले,
तोड़ी चट्टानें फोड़े हिमाले।
हमने घुमाया धरती का पहिया,
हैयारे हैया, हैया रे हैया,

साथी न घबरा बढ़ता चला चल,
थोड़े बहुत है घनघोर बादल।
फिर इसके आगे मंजिलहै भैया,
हैयारे हैया, हैया रे हैया,

ज़र्रे के वरावर समझे हम,
इस सारी ज़मी की गोलाई।
टख्नों[9] के बराबर समझे हम,
पर्वत की ये सारी ऊंचाई।
सातों ही समुन्दर मुंह डाले,
ख़ातिर में न लाए गहराई।
आकाश ही क्या अफ़्लाक[10] ही क्या,
जिबरील[11] है जेरे दामे जुनूं।[12]
अब कुछ भी नहीं...

हां आज तो नामे यार चले,
ये शाम बनामे यार चले।
हां झूम के साजे शौक छिड़े,
हां एक छलकता जाम चले।
हां एक छलकता जामे जुनूं।
अब कुछ भी नहीं...

---

९. पिंडली और पैर के पंजे के बीच के मोड़ की हड्डी १०. आकाश का बहुवचन ११. एक फ़रिश्ते का नाम १२. पागलपन के जाल में फंसा हुआ

भूका है भोपाल



भूका है भोपाल
भूका है भोपाल रे बावा,
भूका है भोपाल!
हाँक रहा है दौक रहा है, फाका और इफ़लास[1]
फाका और इफलास है गोया आंधी और भूचाल
भूका है भोपाल
भूका है भोपाल रे बावा, भूका है भोपाल

लम्बी-लम्बी मूंछों वाले, बिल्ली और ख़रगोश,
अकड़ी-अकड़ी गर्दन वाले, मुफ्लिस और कंगाल
भूका है भोपाल
भूका है भोपाल रे बावा, भूका है भोपाल।
मुल्ला साहब लेकर भागें, मस्जिद की क़ंदील,[2]
पंडित जी बाज़ार में बेचें मंदिर की घन्टाल।
भूका है भोपाल।
भूका है भोपाल रे बावा, भूका है भोपाल।

---

१. भूख और गरीबी २. लालटेन

टोड़े देकर गेहूं ख़रीदें, शहर के ठेकेदार,
जेवर देकर रोटी मांगे सेठ मदनगोपाल।
भूका है भोपाल
भूका है भोपाल रे बाबा, भूका है भोपाल

सेठ बेचारे चीख़ रहे है, फूल रहे हैं पेट,
सरमाया दम टोड़ रहा है, डूब रहा है माल।
भूका है भोपाल
भूका है भोपाल रे बाबा, भूका है भोपाल

तू भी मैं भी मस्त कलन्दर, मस्तों को क्या फ़िक्र,
तेरे घर का हाल रे बाबा, मेरे घर का हाल।
भूका है भोपाल
भूका है भोपाल रे बाबा, भूका है भोपाल

फ़ाके की अफ़रात[३] है यारो, रोज़ी का पैग़ाम,
अपनी क़िस्मत चेत रही है और हैं दो इक साल।
भूका है भोपाल
भूका है भोपाल रे बाबा, भूका है भोपाल

---

३. भुखमरी की अधिकता

कैफ भोपाली, हिन्दुस्तान के ऐसे अलबेले शाइर थे जिनकी आवाज दूर से पहचान ली जाती थी, जिनकी शाइरी में वो तरहदारी थी कि उनका लहजा हजारों मे शिनाख्त किया जा सकता था।

कोई शाइर और अदीब जब अपने लहजे से पहचाना जा सके और जिसका आहंग दिलों को छूने लगे और जिसकी तख्लीकात (रचनाओ) में हमे अपने दुख-सुख, अपना चेहरा और अपनी आवाज सुनाई देने लगे तो उसकी अज्मत मे क्या गुमान हो सकता है। कैफ साहब ऐसे ही शाइर थे कि उनके लहजे की इन्फ़िरादियत (अनोखापन) और उनकी अवाम दोस्ती ने उन्हे आम और खास सबका शाइर बना दिया था।

कैफ़ साहब की पूरी जिन्दगी हादिसों से इबारत रही है। दुनिया ने जो दाग दिये और ज़माने से जो जख्म मिले उनकी न कोई हद है और न हिसाब। उनकी ग़जलो मे हिन्दी के सुबुक और रवाँ (प्रचलित) अल्फाज़ बडी मुनासबत से (औचित्य के साथ) आए हैं। वे लफ्जो के मिजाज से वाकिफ थे और उन्हे सलीके के साथ बरतने का फ़न जानते थे।

कैफ साहब ने शाइरी मे खुदाए सुखन मीर तकी मीर की तक्लीद (अनुसरण) की है। मीर के यहाँ जो सोज़ (दर्द) है कैफ चाहते थे कि वह उनकी गजलो का भी हिस्सा बने। लेकिन इस मामले में वे जौक के हम-ख्याल हैं कि ग़जल में बहुत जोर मारने के बावजूद मीर का सा अन्दाज़ किसी को नसीब न हो सका। बहरहाल कैफ साहब एक भरपूर और खुद्दार शाइर थे जो एक ख़ास अदा के साथ जिये और इस दुआ के साथ जमाने से आँखें चार करते रहे-

जिस दिन मिरी जबीं किसी देहलीज पर झुके,
उस दिन खुदा शिगाफ मिरे सर में डाल दे।

प्रो. आफ़ाक़ अहमद
सेक्रेटरी, म प्र उर्दू अकादमी
भोपाल (म प्र)

ISBN : 81-7365-5

कैफ़ भोपाली, हिन्दुस्तान के ऐसे अलबेले शाइर थे जिनकी आवाज़ दूर से पहचान ली जाती थी, जिनकी शाइरी में वो तरहदारी थी कि उनका लहजा हजारो मे शिनाख्त किया जा सकता था।

कोई शाइर और अदीब जब अपने लहजे से पहचाना जा सके और जिसका आहंग दिलों को छूने लगे और जिसकी तख्लीक़ात (रचनाओं) में हमे अपने दुख–सुख, अपना चेहरा और अपनी आवाज़ सुनाई देने लगे तो उसकी अज्मत में क्या गुमान हो सकता है। कैफ़ साहब ऐसे ही शाइर थे कि उनके लहजे की इन्फ़िरादियत (अनोखापन) और उनकी अवाम दोस्ती ने उन्हें आम और खास सबका शाइर बना दिया था।

कैफ़ साहब की पूरी ज़िन्दगी हादिसों से इबारत रही है। दुनिया ने जो दाग दिये और जमाने से जो जख्म मिले उनकी न कोई हद है और न हिसाब। उनकी ग़ज़लों में हिन्दी के सुबुक और रवाँ (प्रचलित) अल्फाज़ बड़ी मुनासबत से (औचित्य के साथ) आए हैं। वे लफ़्ज़ो के मिज़ाज़ से वाकिफ थे और उन्हें सलीके के साथ बरतने का फ़न जानते थे।

कैफ़ साहब ने शाइरी में खुदाए सुख़न मीर तकी मीर की तक्लीद (अनुसरण) की है। मीर के यहाँ जो सोज (दर्द) है कैफ चाहते थे कि वह उनकी ग़ज़लों का भी हिस्सा बने। लेकिन इस मामले में वे जौक के हम–ख़्याल हैं कि ग़ज़ल मे बहुत ज़ोर मारने के बावजूद मीर का सा अन्दाज़ किसी को नसीब न हो सका। बहरहाल कैफ़ साहब एक भरपूर और खुद्दार शाइर थे जो एक खास अदा के साथ जिये और इस दुआ के साथ ज़माने से आँखें चार करते रहे–

जिस दिन मिरी जबीं किसी देहलीज पर झुके,
उस दिन खुदा शिगाफ़ मिरे सर में डाल दे।

प्रो. आफाक़ अहमद
सेक्रेटरी, म. प्र. उर्दू अकादमी
भोपाल (म प्र)

ISBN : 81-7365-5